भाग–8

1. शक्ति और क्षमा

पाठ से

मौखिक

1. (क) प्रस्तुत पंक्ति इस ओर संकेत कर रही है कि बिना शक्ति के क्षमा का कोई मोल नहीं है।

   (ख) सुयोधन बाघ को कहा गया है।

   (ग) रघुपति जब समुद्र के किनारे मार्ग के लिए याचना कर रहे हैं, वही उदाहरण कवि ने कविता में दिया है।

लिखित

(क) दुष्ट कौरवों ने पाण्डवों को कायर समझा क्योंकि वे कौरवों को उनकी प्रत्येक गलती को क्षमा कर देते थे।

(ख) क्षमा उस सर्प को शोभती है जिसके पास विष भरा हो। वैसे सर्प जो विषरहित, दंतविहीन, विनीत और सरल हो, उन्हें क्षमा नहीं शोभती।

(ग) कवि रघुपति तथा समुद्र का उदाहरण देकर यह समझाना चाहते हैं कि विवेकी पुरुष जहाँ याचना करनी होती है, वहाँ वे अनुनय करते हैं और जहाँ शक्ति प्रदर्शन करना है तो फिर पराक्रमी बन जाते हैं। समुद्र के समक्ष मार्ग के लिए रघुपति तीन दिनों तक याचना करते रहे, परंतु जब समुद्र नहीं पसीजे तो फिर रघुपति को अपना उग्र रूप धारण करना पड़ा।

(घ) सहनशीलता, क्षमा, दया आदि भाव याचना करते समय उपयोगी हैं। अपराधी यदि अपने अपराध को समझकर क्षमा माँगने लगे तो उसे क्षमा करना उचित है।

(ङ) जिसमें विजय प्राप्त करने की शक्ति है, वहीं शक्ति का वास होता है।

2. प्रस्तुत कविता के माध्यम से यह समझाने का प्रयत्न किया गया है कि बिना शक्ति के क्षमा का कोई मोल नहीं होता। दूसरों को क्षमा देने का

अधिकारी वही मनुष्य होता है, जो स्वयं शक्तिसंपन्न हो। अनुनय-विनय को भी मान्यता तब ही मिलती है, जब मनुष्य शक्तिशाली होता है। शक्तिहीन व्यक्ति यदि किसी को क्षमा भाव प्रदर्शित करता है, तो उसे केवल कायर ही समझा जाता है।

3. (क) (अ) (✓) (ख) (ब) (✓)

4. (क) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि तीर में ही पराक्रम है और उसी में विनय करने की शक्ति भी है।

   (ख) संधि-वचन उसी का मान्य होता है जिसमें विजय प्राप्त करने की शक्ति होती है।

   (ग) 'बल का दर्प' से कवि का अभिप्राय है कि शक्तिशाली व्यक्ति को अपनी शक्ति पर गर्व होता है।

   (घ) 'तभी पूजता जग है' पंक्ति में शक्तिशाली पुरुष के पूजने की बात कही गई है।

5. (क) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से यह बताया गया है कि क्षमा उस सर्प को शोभा देती है जो विष से भरा हो। जो सर्प विषरहित, दंतहीन विनीत तथा सरल हो उसे क्षमा शोभा नहीं देती। उसी प्रकार वीर पुरुष को क्षमा करना शोभा नहीं देती।

   (ख) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि तीर में विनय की चमक होती है उसी व्यक्ति के अनुनय वचन पूजनीय हैं जिनमें विजय प्राप्त करने की शक्ति होती है।

   (ग) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि सहनशीलता, क्षमा, दया को लोग तभी पूजते हैं जब उस व्यक्ति में बल का अभिमान स्पष्ट दिखाई देता है।

भाषा से

1.

कायर	–	डरपोक, भीरू	तीर	–	शर, बाण
साँप	–	सर्प, भुजंग	विष	–	गरल, जहर
दीप्ति	–	चमक, प्रकाश	शत्रु	–	दुश्मन, रिपु
क्रोध	–	रोष, कोप	आग	–	अग्नि, ज्वाला

2. (क) अपना – पराया पराये धन पर लालच नहीं करना चाहिए।

(ख) आशावादी – निराशावादी निराशावादी सोच नहीं रखनी चाहिए।

(ग) कड़वा – मधुर मधुर वचन बोलना चाहिए।

(घ) आधुनिक – प्राचीन यह प्राचीन किला है।

(ङ) कठिन – सरल परीक्षा में पूछे गए प्रश्न सरल थे।

(च) अमृत – विष सर्प में विष होता है।

3. यह = ये वे = वह

वह = वे ये = यह

4. (क) (ब) (✓) (ख) (स) (✓)

(ग) (स) (✓) (घ) (अ) (✓)

5. आत्मीय शरणार्थी विद्वान अदृश्य ग्रामवासी

6. छात्र स्वयं करें।

7. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

मेरी दृष्टि में क्षमा उसे भुजंग की शोभा देती है जिसके पास गरल अर्थात् विष हो उसे नहीं शोभा देती जो देतहीन विषरहित, विनीत तथा सरल हो।

गहन सोच

नहीं, विनयशील होना कायरता की निशानी बल्कि उसका सर्वोत्कृष्ट गुण है।

2. अनुभव आधारित अधिगम

रचनात्मकता

(1) हिंद महासागर (2) कैस्पियन सागर

(3) आर्कटिक महासागर (4) चीन सागर

(5) बंगाल की खाड़ी (6) अटलांटिक महासागर

(7) प्रशांत महासागर (8) अरब सागर

3. चित्र-वर्णन

छात्र/छात्राएँ दिए गए चित्र को देखकर 40-45 शब्दों में वर्णन करें।

2. अन्याय के विरुद्ध

पाठ से

मौखिक

1. (क) लेखक ने बच्चों की अध्यापिका जूलिया को अपने पढ़ने के कमरे में उसकी तनख्वाह का हिसाब करने के लिए बुलाया।

(ख) लेखक द्वारा तनख्वाह के पैसे काटने की बात सुनकर जूलिया का चेहरा पीला पड़ गया और वह अपनी ड्रेस की सिकुड़नें दूर करने लगी।

(ग) जूलिया की मालकिन ने उसे तीन रूबल दिए थे, इसकी जानकारी लेखक को नहीं थी।

(घ) जूलिया ने अपनी तनख्वाह के पैसे लेखक से मिलने पर उन्हें धन्यवाद कहा।

(ङ) लेखक ने जूलिया के साथ छोटा-सा क्रूर मज़ाक उसे सबक सिखाने के लिए किया था।

लिखित

(क) जूलिया की तनख्वाह का हिसाब लेखक खुद ही इसलिए करना चाह रहे थे क्योंकि उनके अनुसार जूलिया को पैसे की ज़रूरत

होगी। लेखक को ऐसा लग रहा था कि जूलिया अपने-आप कभी अपने पैसे नहीं माँगेगी।

(ख) जूलिया ने लेखक की चाय की प्लेट और प्याली तोड़ दी थी, जो बहुत कीमती थी। इसलिए लेखक ने कहा कि मेरे भाग्य में नुकसान उठाना ही बदा है।

(ग) वान्या के जूते नौकरानी ने चुराए थे। लेखक ने इसके लिए जूलिया की लापरवाही बताया।

(घ) लेखक ने जूलिया को उसकी तनख्वाह का हिसाब काटकर उसे दिया। पैसे लेकर उसने लेखक को धन्यवाद कहा। यह सुनकर लेखक गुस्से से उबलने लगे।

(ङ) जूलिया के हिसाब के अस्सी रूबल देने से पहले लेखक ने उससे पूछा कि क्या ज़रूरी है कि इनसान भला कहलाए जाने के लिए इतना दब्बू, भीरू और बोदा बन जाए कि उसके साथ जो अन्याय हो रहा है, उसका विरोध तक न करे? बस खामोश रहे और सारी ज़्यादतियाँ सहता जाए?

2. (क) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि जूलिया को जब उसकी तनख्वाह के पैसे काटकर लेखक ने दिए तो उसने पैसे लेकर लेखक को धन्यवाद भी कहा। जबकि लेखक ने उसके साथ छोटा-सा एक क्रूर मज़ाक किया था। लेखक को भी पता था कि उन्होंने जूलिया के पैसे हड़प लिए हैं।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि लेखक ने जूलिया को उसकी तनख्वाह के पैसे काटकर दिए तब भी वह खामोश थी। तब लेखक ने कहा कि अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जूलिया तुम्हें इस कठोर, निर्मम और हृदयहीन संसार से लड़ना होगा। अपनी पूरी ताकत से ऐसे संसार से लड़ना होगा।

3. छात्र स्वयं करें।

4. ज़रूरत सिर्फ़

हफ़्ते साफ़

नज़र	ज़बान
चीज़	आवाज़

5. (क) (स) (✓) (ख) (अ) (✓)
(ग) (द) (✓) (घ) (ब) (✓)
(ङ) (द) (✓)

भाषा से

1. (क) हाँ, तो तुम्हारी तनख्वाह तीस रूबल महीना तय हुई थी न? अन्य पुरुषवाचक
(ख) भाई, मैंने डायरी में सब लिख रखा है। उत्तम पुरुषवाचक
(ग) मैं डायरी में हर चीज नोट कर लेता हूँ। उत्तम पुरुषवाचक
(घ) तुम अपने काम में ढील दोगी तो पैसे कटेंगे या नहीं? मध्यम पुरुषवाचक
(ङ) उसने धीरे से खाँसा। अन्य पुरुषवाचक
(च) आपका धन्यवाद! अन्य पुरुषवाचक

2.

तनख्वाह	–	वेतन	ज़रूरत	–	आवश्यकता
बीवी	–	पत्नी	नुकसान	–	हानि
सिर्फ़	–	केवल	तमाम	–	सभी
तापरवाही	–	असावधानी	नज़र	–	दृष्टि

3. (क) नागा (अनुपस्थित) मेरा नौकर महीने में चार दिन काम से नागा रहा।
(ख) भीरु (डरपोक) जूलिया स्वभाव से बहुत भीरु थी।
(ग) इनसान (मनुष्य) इनसान का जीवन संघर्ष करने में ही बीतता है।
(घ) अचरज (आश्चर्य) रोहन जैसा लापरवाह छात्र परीक्षा में प्रथम आया, यह आश्चर्य की बात है।
(ङ) विनीत (नरम) आकाश बहुत ही विनीत स्वभाव वाला लड़का है।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

लेखक ने जूलिया के साथ जो व्यवहार किया है वो भी पूर्णतया सही था, क्योंकि लेखक ने उसे केवल सीख देने के लिए किया था कि कभी भी अन्याय को सहन नहीं करना चाहिए। बल्कि उसका पूर्णतया पुरजोर विरोध करना चाहिए।

गहन सोच

संसार में दब्बू, भीरु और बोदे लोगों के लिए कोई जगह नहीं है। क्योंकि ऐसे लोगों को समाज के कुछ अवांछनीय तत्व उन्हें सरल और सुखमय जीवनयापन नहीं करने देते बल्कि वे दब्बू, भीरु तथा बोदे लोगों का भरपूर शोषण कर उसका भरपूर फायदा उठाते हैं।

2. संचार

छात्र/छात्राएँ कक्षा में इस विषय– "दूसरों की मेहनत के पैसे हड़पना गलत है" पर एक सामूहिक परिचर्चा का आयोजन करें।

3. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट की सहायता से पाठ में दिए गए प्रसिद्ध विदेशी लेखकों/कवियों के नाम के रिक्त स्थानों को पूरा करें।

4. चित्र-वर्णन

छात्र/छात्राएँ दिए गए चित्र को देखकर 40–45 शब्दों में वर्णन करें।

3. साए

पाठ से

मौखिक

1. (क) बच्चों के पिता अफ्रीका कमाने के लिए गए थे।

(ख) अफ्रीका से आए पहले पत्र में रोग के बेकाबू होने की सूचना थी।

(ग) पत्र पढ़कर अपने पति की बीमारी की खबर जानकर माँ की आँखें भर आईं।

(घ) अज्जू पढ़ाई में अच्छा और मेहनती था।

(ङ) पत्र में शादी में सम्मिलित न होने का कारण लिखा था कि एक जो नया कारोबार शुरू हुआ है, उसमें मज़दूरों की हड़ताल चल रही है, ऐसे संकट के समय सब छोड़कर आना संभव नहीं है।

(च) अज्जू के पिता अपने परिवार से मिलने नहीं आ पा रहे थे इसलिए उन्हें अकस्मात चौंकाने के लिए अज्जू ने नैरौबी जाने का निश्चय लिया।

लिखित

(क) दूसरा पत्र पाकर सबके चेहरे इसलिए खिल उठे क्योंकि उसमें अज्जू के पिता के स्वास्थ्य में सुधार की खबर थी।

(ख) घर से जो पत्र भेजा गया उसमें लिखा था कि अब उसे थोड़ा-सा समय निकालकर कभी घर भी आना चाहिए। बच्चे बहुत याद करते हैं। उसे देखने भर को तरसते हैं।

(ग) लड़की की शादी के लिए वर की तलाश में भटकने की अधिक आवश्यकता न हुई। आसानी से खाता-पीता घर मिल गया इस भ्रम में कि कन्या का बाप अफ्रीका में सोना बटोर रहा है।

(घ) वृद्ध व्यक्ति ने पिता की मृत्यु का रहस्य इसलिए छिपा रखा था क्योंकि इस खबर को सुनकर उनका परिवार सदमे में आ जाता, बच्चे अनाथ हो जाते और उनकी पत्नी भी टूटकर मर जातीं।

(ङ) वृद्ध व्यक्ति ने अपने मित्र को मरते समय वचन दिया था कि वह अपने साझे कारोबार से मित्र के हिस्से के पैसों से उसके परिवार का भरण-पोषण करेगा और इसे उसने बखूबी निभाया।

2. (क) (स) (✓) (ख) (द) (✓)

(ग) (अ) (✓) (घ) (द) (✓)

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि नैरोबी से जब विस्तृत पत्र आया तो उसमें उत्साहजनक बातें थीं। सबको पत्र पढ़कर स्वाभाविक रूप से प्रसन्नता हुई कि पिता के स्वास्थ्य में भी सुधार हो रहा है, कारोबार का भी कुछ विस्तार हो रहा है। इस प्रकार परिवार की डूबती नाव धीरे-धीरे फिर पार लग रही थी।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि अनेक पत्र भेजने और अपने कारोबार के बीच फँसे होने के कारण समय का कुछ पता नहीं चला। इस प्रकार, अनेक वायदे करने पर भी पिता का घर आना संभव नहीं हो पाता और समय पंख बाँधकर अबाध गति से उड़ता रहा अर्थात् समय बहुत तेजी से निकलता रहा।

(ग) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि जमा किया हुआ पैसा ज्यादा समय तक नहीं चलता और बिना उचित मार्गदर्शन के संग्रहित रुपये जिम्मेदारियों के बोझ में विलीन हो जाते हैं।

(घ) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि दुख की घड़ी में यदि असहाय को तिनके मात्र का भी सहारा मिल जाए तो वह कठिन से कठिन मुश्किलों का सामना करते हुए सफल हो जाता है।

5. शीर्षक–मित्रता का कर्ज़। इस पाठ में दो मित्रों की मित्रता की मार्मिक कहानी का उल्लेख है। मित्र की मृत्यु के बाद दूसरे मित्र ने उसके परिवार का भरण-पोषण किया।

भाषा से

1. (क) (ब) (✓) (ख) (स) (✓)
   (ग) (द) (✓) (घ) (अ) (✓)
2. (क) पति का पत्र पढ़कर पत्नी और बच्चे रो पड़े। संबंध कारक
   (ख) वृद्ध व्यक्ति ने अज्जू को उसके पिता की मृत्यु की जानकारी दी।
   ने–कर्ता, को–कर्म, की–संबंध
   (ग) पिता शादी में सम्मिलित न हो सके। अधिकरण कारक
   (घ) घर से पत्र जाते रहे। करण कारक
   (ङ) वह किसी से लिखवाकर पत्र भेजता था। करण कारक
   (च) अज्जू के लिए कीमती कैमरा आया। संप्रदान कारक
3. छात्र स्वयं करें।
4. चिट्ठी – चिट्ठियाँ बहिन – बहिनें
   नाव – नावें रात – रातें
   गहना – गहने कक्षा – कक्षायें
   बच्चा – बच्चे लड़की – लड़कियाँ
5. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

अज्जू के पिता के मित्र ने 'साए' बनकर एक सच्चे मित्र का दायित्व निभाकर एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया कि– विदेश में अपने मित्र की मृत्यु के उपरांत दूसरे मित्र ने वर्षों तक अपने मित्र के परिवार को एक साए की तरह संरक्षण दिया।

गहन सोच

हाँ! यह बिल्कुल ध्रुव सत्य है कि आज सच्ची मित्रता आज डगमगाने लगी है और बहुत कम सच्ची मित्रता देखने को मिलती है। वास्तव में आज की मित्रता मतलब परस्ती तथा लालच और स्वार्थ के गुणों से परिपूर्ण मित्रता होती है जो कि सिर्फ अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए होती है अपना स्वार्थ सिद्ध होते ही मित्रता समाप्त हो जाती है।

2. संचार

छात्र/छात्राएँ 'रंगभेद अनुचित है।' इस विषय पर कक्षा में अपने मित्रों के साथ चर्चा करें।

3. शोधपरक कौशल

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।

4. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ पुस्तकालय से गांधी जी की आत्म कथा लेकर पढ़ें।

5. वैश्विक जागरूकता

छात्र/छात्राएँ स्वयं अफ्रीका महादेश के देशों तथा उन देशों की राजधानियों के नाम लिखकर एक सूची तैयार करें।

छात्र/छात्राएँ विश्व के राजनीतिक मानचित्र पर केन्या की राजधानी नैरोबी को चिह्नित करें।

6. आंतरिक अनुशासनात्मक गतिविधि

प्रतिभा पलायन एक प्रवासन है जो जीवन के बेहतर मानक के लिए व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से प्रेरित होता है। प्रतिभा पलायन के कारण होने वाले प्रवासन के कारण गंतव्य स्थान पर भूमि कीमतों और आयातित वस्तुओं पर उपभोक्ता खर्च के वृद्धि के रूप में नकारात्मक परिणाम होते हैं।

4. गौरा

पाठ से

मौखिक

1. (क) अपनी छोटी बहनों के कहने पर लेखिका ने गाय पालने का निश्चय किया।

(ख) गौरा (गाय) को लाल-सफ़ेद गुलाबों की माला पहनाई गई। केशर-रोली का बड़ा-सा टीका लगाया गया, घी का चौमुखी दीया जलाकर आरती उतारी गई और उसे दही-पेड़ा खिलाया गया।

(ग) अन्य पशु-पक्षियों के साथ गौरा का व्यवहार बहुत ही मित्रवत था।

(घ) गौरा का दूध निकालने के लिए पुराने ग्वाले को नियुक्त किया गया।

(ङ) गौरा की मृत्यु सुई खिला देने से हुई।

लिखित

(क) लेखिका की बहन ने लेखिका से कहा कि तुम इतने पशु-पक्षी पाला करती हो, एक गाय क्यों नहीं पाल लेती, जिसका कुछ उपयोग हो।

(ख) गौरा के पुष्ट लचीले पैर, भरे पुट्ठे, चिकनी पीठ, सुडौल गर्दन, निकलते हुए छोटे-छोटे सींग, भीतर की लालिमा की झलक देखते हुए कमल की दो अधखुली पंखड़ियों जैसे कान, लंबी और अंतिम छोर पर काले सघन चामर का स्मरण दिलाने वाली पूँछ बहुत ही आकर्षक थे। गौरा की उज्ज्वलता देखकर ऐसा लगा जैसे उसके रोमों पर अभ्रक का चूर्ण मल दिया गया हो।

(ग) गाय जब बँगले पर पहुँची तो उसे लाल-सफ़ेद गुलाबों की माला पहनाई गई, केशर-रोली का बड़ा सा टीका लगाया गया, घी का चौमुखी दीया जलाकर आरती उतारी गई और उसे दही-पेड़ा खिलाया गया।

(घ) महात्मा गाँधी ने कहा है—गाय करुणा की कविता है। गाय की आँखें देखकर ही इसे समझा जा सकता है।

(ङ) दो-तीन मास के उपरांत गौरा ने दाना-चारा खाना बहुत कम कर दिया और वह उत्तरोत्तर दुर्बल और शिथिल रहने लगी। इस प्रकार गौरा को समय का बोध हो गया था।

(च) लालमणि को तो अपनी माँ की व्याधि और आसन्न मृत्यु का बोध नहीं था। उसे दूसरी गाय का दूध पिलाया जाता था, जो उसे रूचता नहीं था। वह तो अपनी माँ का दूध पीना और उससे खेलना चाहता था। अवसर मिलते ही वह गौरा के पास पहुँचकर या अपना सिर मार-मारकर उसे उठाना चाहता था या खेलने के लिए उसके चारों ओर उछल-कूद करके परिक्रमा-सी देता रहता।

(छ) एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में चार बजे गौरा ने अपना मुख सदा के समान लेखिका के कंधे पर रखा, वैसे ही वह एकदम पत्थर जैसा भारी हो गया और मेरी बाँह पर से सरककर धरती पर आ गिरा। इस प्रकार सूई ने हृदय को बेघकर गौरा की जान ले ली।

(ज) प्रस्तुत पाठ 'गौरा' एक मर्मस्पर्शी संस्मरण है जिसमें गौरा गाय के लुभावने रूपाकार और मुग्ध करनेवाले उसके स्वभाव का चित्रण किया है। गौरा की मृत्यु के चित्रण में लेखिका ने अपने हृदय की सारी करूणा उड़ेल दी है। गौरा की मृत्यु सहज नहीं थी। उसे ग्वालें द्वारा गुड़ में सूई मिलाकर खिला दी गई थी।

2. (क) वास्तव में मेरी छोटी बहिन श्यामा अपनी <u>लौकिक</u> बुद्धि में मुझसे बड़ी है।

(ख) गौरा की <u>उज्ज्वलता</u> देखकर ऐसा लगा, मानो उसके रोमों पर <u>अभ्रक</u> का चूर्ण मल दिया गया हो।

(ग) अन्य पशु-पक्षी अपनी <u>लघुता</u> और उसकी <u>विशालता</u> का अंतर भूल गए।

(घ) एक वर्ष के उपरांत गौरा एक <u>पुष्ट</u> सुंदर <u>वत्स</u> की माता बनी।

3. (क) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से गौरा गाय के सौंदर्य का वर्णन किया गया है। गौरा वास्तव में बहुत प्रियदर्शिनी थी। गौरा के चौड़े उज्ज्वल माथे और लंबे साँचे में ढले हुए से मुख पर आँखें बर्फ में

नीले जल के कुंडों के समान लगती थीं। गाय के नेत्रों में हिरन के नेत्रों जैसा चकित विस्मय न होकर एक आत्मीय विश्वास ही रहता है।

(ख) गौरा गाय का लेखिका के साथ साहचर्यजनित लगाव, मानवीय स्नेह के समान ही निकटता चाहता था। लेखिका के निकट जाने पर वह सहलाने के लिए गर्दन बढ़ा देती, हाथ फेरने पर अपना मुख आश्वस्त भाव से कंधे पर रखकर आँखें मूँद लेती।

4. (क) (ब) (✓) (ख) (स) (✓)
(ग) (स) (✓) (घ) (ब) (✓)

भाषा से

1.

बचपन	–	बुढ़ापा	प्रभावित	–	अप्रभावित
सुविधा	–	असुविधा	अनोखा	–	सामान्य
विश्वास	–	अविश्वास	लघुता	–	विशालता
प्रसन्न	–	दुखी	कृतज्ञ	–	कृतघ्न

2.

रवि	+	इन्द्र	= रवीन्द्र	अति	+	उत्तम	= अतिउत्तम
महा	+	ऋषि	= महर्षि	रजनी	+	ईश	= रजनीश
सूर्य	+	उदय	= सूर्योदय	उत्	+	घाटन	= उद्घाटन
दुः	+	शासन	= दुशासन	मनः	+	रंजन	= मनोरंजन
नै	+	अक	= नायक	निः	+	धन	= निर्धन

3. (क) वह महिला बड़ी विदुषी है।
(ख) सड़क पर एक बूढ़ी औरत जा रही है।
(ग) मोहन की बहन गुणवती है।
(घ) शेखर ने एक काला बकरा खरीदा।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

लेखिका ने अपनी छोटी बहन श्यामा को 'लौकिक बुद्धि में बड़ी' इसलिए कहा होगा– क्योंकि बहिन ने एक दिन कहा, तुम इतने पशु-पक्षी पाला करती हो, एक गाय क्यों नहीं पाल लेती, जिसका कुछ उपयोग हो। वास्तव में मेरी छोटी बहिन श्यामा अपनी लौकिक बुद्धि में मुझसे बड़ी है और बचपन से उनकी कर्मनिष्ठा तथा व्यवहार कुशलता की बहत प्रशंसा होती है, विशेषत: मेरी तुलना में।

गहन सोच

'उनका विचार संक्रामक रोग के समान सुनने वाले को तत्काल प्रभावित करता है।' अपनी छोटी बहन के प्रति लेखिका ने ऐसा इसलिए कहा होगा कि यदि वे आत्मविश्वास के साथ कुछ कहती है तो उनका विचार संक्रामक रोग के समान सुनने वाले को तत्काल प्रभावित करता है। आश्चर्य नहीं, उस दिन उनके उपयोगितावाद संबंधीभाषण ने अधिक प्रभावित किया कि तत्काल उस सुझाव का कार्यान्वयन आवश्यक हो गया।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

वैसे खाद्य की किसी भी समस्या के समाधान के लिए पशु-पक्षी पालना मुझे कभी नहीं रुचा। बकरी, कुक्कुट, मछली आदि पालने के मूल उद्देश्य का ध्यान आते ही मेरा मन विद्रोह करने लगता है।

3. कल्पना आधारित गतिविधि

छात्र/छात्राएँ कल्पना शक्ति के आधार पर स्वयं उत्तर दें।

4. रचनात्मक गतिविधि

छात्र/छात्राएँ 'गाए एक उपयोगी पशु' विषय पर 80-85 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखें।

5. पांडवों का विवाह

पाठ से

मौखिक

1. (क) महोत्सव पांचाल देश में होनेवाला था क्योंकि राजा द्रुपद ने यज्ञ की वेदी से एक कन्या पाई थी और उसी का स्वयंवर होनेवाला था।

(ख) स्वयंवर में भाग लेने के लिए पाँचों पांडव, कर्ण के साथ दुर्योधन आदि कुरु लोग तथा बलदेव और कृष्ण आदि यादव लोग भी आए।

(ग) कर्ण के बारे में जब यह पता चला कि वह सूत वंश से है तो द्रौपदी ने विवाह करने से इनकार कर दिया।

(घ) द्रुपद को एक ब्राह्मण कुमार के साथ अपनी कन्या का विवाह करने के लिए तैयार देखकर आमंत्रित नरेशों का क्रोध भड़क उठा। वे एक-दूसरे के मुँह की तरफ देखकर कहने लगे–''राजा द्रुपद ने हम लोगों का निरादर किया है। इस स्वयंवर में हम लोगों का बड़ा भारी अपमान हुआ है।''

(ङ) अर्जुन के यह कहने पर कि हम न तो धनुर्वेद हैं और न इंद्र, किन्तु अस्त्र विद्या जानने वाले ब्राह्मण अवश्य हैं और तुमको हराने के लिए लड़ाई के मैदान में आए हैं, कर्ण ने ब्रह्म तेज की श्रेष्ठता को स्वीकार किया।

(च) कृष्ण के यह कहने पर कि इस ब्राह्मण कुमार (भीम) ने धर्म से राजकुमारी को प्राप्त किया है, सभी नरेश शांत हो गए।

लिखित

(क) कुंती के साथ पाँचों पांडव एक रमणीक सरोवर के किनारे विश्राम करके पांचाल देश की ओर बढ़ चले। रास्ते में उन्हें बहुत से ब्राह्मण मिले। उन ब्राह्मणों ने पांडवों को बताया कि तुम लोग हमारे साथ पांचाल चलो, वहाँ राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी का

स्वयंवर होनेवाला है। यह सुनकर पांडव ब्राह्मणों के साथ हो लिए और पांचाल नगर पहुँच गए। स्थान और नगर अच्छा देखकर पांडव ब्राह्मणों के साथ एक कुम्हार के घर में रहने लगे।

(ख) राजा द्रुपद ने मन-ही-मन यह विचार किया था कि वे अपनी कन्या का विवाह बहुत बड़े धनुर्धारी वीर से करेंगे। इसी इरादे से उन्होंने एक ऐसा धनुष बनवाया था, जिस पर प्रत्यंचा चढ़ाकर झुकाना बड़ा कठिन था। उन्होंने एक आकाशयंत्र भी तैयार करवाया था। इस यंत्र की निचली सतह पर एक मछली बनी हुई थी और यंत्र गोलाई में घूमता था। राजा द्रुपद ने घोषणा की थी कि जो शूरवीर आकाशयंत्र की मछली की आँख उसके नीचे रखे पात्र में देखकर बेध देगा, उसी के साथ मैं अपनी पुत्री का विवाह करूँगा।

(ग) स्वयंवर मंडप अत्यंत रमणीक स्थान पर बनाया गया। मंडप के चारों ओर दीवार बनाई गई, खाइयाँ खोदी गईं। फिर उसमें जगह-जगह पर द्वार बनाए गए।

(घ) धृष्टद्युम्न राजकुमारी द्रौपदी का भाई था। धृष्टद्युम्न ने उपस्थित नरेशों से कहा—आप लोग श्रवण कीजिए। यह धनुष-बाण और निशाना है, जो आकाशयंत्र के नीचे रखे द्रव में देखकर इस मछली की आँख बेध देगा, उसी वीर पुरुष को मेरी बहिन जयमाला पहनाएगी।

(ङ) द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित राजाओं ने शर्त के अनुसार अपना-अपना बल दिखाया, किंतु वे सभी असफल रहे। उन सबों ने हार मान ली। वे बहुत ही लज्जित हुए। उनकी दुर्दशा देखकर अर्जुन बैठे न रह सके। वे ब्राह्मण वेश को भूल गए और अपने क्षत्रिय तेज के कारण उठकर उस तरफ बढ़े, जिस तरफ से निशाना लगाया जाना था। इससे ब्राह्मणों में बड़ा कोलाहल मच गया।

(च) द्रुपद को एक ब्राह्मण कुमार के साथ अपनी कन्या का विवाह करने के लिए तैयार देखकर आमंत्रित नरेशों का क्रोध भड़क

उठा। क्रोध में अंधे हुए सैकड़ों हथियारबंद राजा तब राजा द्रुपद की तरफ झपटे, अर्जुन और भीमसेन ने यह देखकर हथियार उठा लिए और पांचाल नरेश की रक्षा करने के लिए आगे बढ़े।

2. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓)
(घ) (✓) (ङ) (✓)

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (द) (✓) (ख) (ब) (✓)
(ग) (स) (✓) (घ) (अ) (✓)
(ङ) (द) (✓)

भाषा से

1. (क) धनुर्धारी (ख) स्वयंवर
(ग) यथाविधि (घ) लाक्षागृह
(ङ) जनसमूह

2. अन – अनपढ़, अनादर अध – अधखिला, अधपका
हर – हरपल, हररोज़ कु – कुसंग, कुचक्र
डिप्टी – डिप्टी कमिश्नर, डिप्टी डायरेक्टर
सु – सुडौल, सुपुत्र

3.

'ता' प्रत्यययुक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
सफलता	सफल	ता
निपुणता	निपुण	ता
श्रेष्ठता	श्रेष्ठ	ता
आवश्यकता	आवश्यक	ता

4.

शब्द	विच्छेद
स्वयंवर	स्वयं + वर
यथाविधि	यथा + विधि
यथोचित	यथा + उचित

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

यज्ञ का तात्पर्य है– त्याग, समर्पण, शुभ कर्म। अपने खाद्य पदार्थों एवं मूल्यवान सुगंधित पौष्टिक द्रव्यों को अग्नि एवं वायु के माध्यम से समस्त संसार के कल्याण के लिए यज्ञ द्वारा वितरित किया जाता है। वायु शोधन से सबको आरोग्यवर्धक साँस लेने का अवसर मिलता है।

यज्ञ से लाभ– यज्ञ द्वारा वायु शुद्ध होती है। रोग के कीटाणुओं का नाश होता है। इसके अतिरिक्त अनावृष्टि के समय वृष्टि की कमी को दूर करता है। यज्ञ में घी का प्रयोग वर्षा लाने में सहायक होता है। घी के अणु वर्षा बरसाने में अपूर्व साधन है।

गहन सोच

माना जाता है कि महाभारत काल में पांडवों को जलाकर मारने के लिए लाक्षागृह बनवाया गया था। यहाँ प्रचलित मान्यताओं के अनुसार युधिष्ठिर को युवराज घोषित किया गया, तो दुर्योधन को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आई और उसने ईर्ष्या के कारण पांडवों को मारने के लिए लाक्षागृह बनवाया गया था।

2. भारत का ज्ञान

छात्र/छात्राएँ 'बाल महाभारत' की कहानी पढ़कर कौरवों और पांडव पक्ष के प्रमुख वीरों की एक सूची तैयार करें।

3. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से जानकारी प्राप्त करें।

4. कला समेकन

(1) यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

(2) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

6. तूफ़ानों की ओर

पाठ से

मौखिक

1. (क) कवि नाविक से कह रहा है कि अपनी पतवार तूफ़ानों की ओर घुमा दो।

(ख) जीवन में 'तूफ़ानों का प्यार' मिलने का आशय तूफ़ानों का सामना करने से है।

(ग) मानव में जब तक साँस है, तभी तक वह मानव है, अन्यथा वह मिट्टी का पुतला है।

(घ) कविता 'तूफ़ानों की ओर' में नाविक मिट्टी के पुतले मानव का प्रतीक है और तूफ़ान लहरों का प्रतीक है।

(ङ) मानव इस धरती का सबसे साहसी और विलक्षण जीव है। वह तूफ़ानों से लड़ना जानता है। इसके जीवन में कितने ही तूफ़ान आए, पर उसने हार नहीं मानी। इसलिए कवि का कहना है कि मेरी नाव तूफ़ानों की ओर घुमा दो।

लिखित

(क) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि मानव तूफ़ानों से लड़ना जानता है। उसके जीवन में कितने ही तूफ़ान आए पर उसने हार नहीं मानी ठीक उसी प्रकार जैसे सिंधु में निरंतर ज्वार उठता रहता है।

(ख) लहरों के स्वर में कुछ बोलने से तात्पर्य है कि मानव तूफ़ानों से लड़ना जानता है। उसके जीवन में कितने ही तूफ़ान आए और वह साहस के साथ लड़ता रहा।

(ग) मानव जीवन निरंतर संघर्ष करता रहता है। मानव जीवन में कितने ही तूफ़ान आए हैं और मनुष्य इन तूफ़ानों से लड़ना जानता है।

मानव मिट्टी के पुतले के समान है, जो जीवन के संघर्षों से सदैव लड़ता रहता है, कभी हार नहीं मानता।

(घ) सागर की लहरों में असीम शक्ति है, परंतु माँझी उसका मुकाबला तब तक करता है जब तक उसके साँसों में स्पंदन है। उसका हाथ कभी नहीं रुकता और इसके बल पर ही उसने सातों सागर पार कर लिया।

(ङ) इस कविता का केंद्रीय भाव है—मानव इस धरती का सबसे साहसी और विलक्षण जीव है। वह तूफ़ानों से लड़ना जानता है। उसके जीवन में कितने ही तूफ़ान आए, पर उसने हार नहीं मानी।

2. प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य को सागर की लहरों के समान संघर्षरत रहना चाहिए। तूफ़ान की अवस्था में भी उसे साहस के साथ संघर्ष करना चाहिए। जीवन में तूफ़ानों का सामना कभी-कभी होता है, इसलिए कवि नाविक को कहता है कि अपनी पतवार तूफ़ान की ओर घुमा दो ताकि संघर्ष करने का अवसर मिले।

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (अ) (✓) (ख) (द) (✓)
(ग) (अ) (✓) (घ) (अ) (✓)
(ङ) (अ) (✓)

भाषा से

1.

सिंधु	– सागर, रत्नाकर		नाविक	–	नौचालक, मल्लाह
विष	– जहर, गरल		हाथ	–	हस्त, भुजा
स्वर	– ध्वनि, आवाज़		हृदय	–	वक्ष, उर

2. तूफ़ान – त् + ऊ + फ + आ + न + अ
प्यार – प् + य् + आ + र् + अ
स्पंदन – अ + स + प + न + द + न + अ
नाविक – न + आ + व + इ + क

मिट्टी – म + इ + ट + ट + ई

सिंधु – स + इ + न + ध + उ

3. के ऊपर – छत के ऊपर बंदर बैठे हैं।

के बदले – मजदूर को अनाज के बदले पैसे दे दो।

की बजाय – तुम रेलगाड़ी की बजाय हवाई जहाज से जाओ।

के अनुसार – प्राचार्य के अनुसार कल विद्यालय में अवकाश है।

के बिना – मेरे भाई के बिना यह काम पूरा नहीं होगा।

के अलावा – हमारे परिवार के अलावा शादी समारोह में कोई और नहीं आया।

के विपरीत – नियम के विपरीत मत चलो।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

कवि नाविक को तूफ़ानों की ओर पतवार घुमाने के लिए इसलिए कह रहा है, क्योंकि लहरों के स्वर में कुछ बोलने तथा अंधड़ में साहस की परीक्षा भी हो जाएगी। सागर भी यह जान ले कि मिट्टी के पुतले मानव ने कभी हार नहीं मानी है।

गहन सोच

कवि ने मानव को मिट्टी का पूतला बताते हुए कभी हार न मानने वाला इसलिए कहा है क्योंकि सागर भी यह जान ले कि मिट्टी के पुतले मानव ने कभी हार नहीं मानी है।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से विश्व के साथ प्रसिद्ध नाविकों के नाम की खोज करके लिखें।

3. चित्र-वर्णन

छात्र/छात्राएँ दिए गए चित्र को देखकर 40-45 शब्दों में वर्णन कीजिए।

7. ऐनीमेशन फ़िल्में

पाठ से

मौखिक

1. (क) मानव ने विज्ञान के क्षेत्र में विस्तृत प्रगति की है। उसने कंप्यूटर, रोबोट, अंतरिक्ष यान, रडार इत्यादि बनाए।

   (ख) मनोरंजन के क्षेत्र में विज्ञान ने अपना कमाल दिखाकर इसे पहले से कहीं अधिक रुचिकर और रोमांचक बना दिया है।

   (ग) कार्टून फ़िल्मों को बृहद लोकप्रियता दिलाई 'मिक्की माउस' ने। इसके बाद 'अलादीन', 'टॉय स्टोरी', 'स्नो व्हाइट', 'टारजन', 'हरक्यूलिस', 'चिकन लिटिल' जैसी अनेक काटून फ़िल्में प्रदर्शित हुईं।

   (घ) ऐनीमेशन फ़िल्में कल्पना शक्ति और तकनीक का संगम हैं। इनमें पहले कैरेक्टर्स की कल्पना की जाती है।

   (ङ) ऐनीमेशन कई प्रकार की होती है, जैसे–स्टॉप मोशन, 2-डी एवं 3-डी। स्टॉप मोशन में परिशोधित मिट्टी (क्ले) द्वारा पात्रों का निर्माण किया जाता है।

   (च) ऐनीमेशन तकनीक का उपयोग बहुआयामी है। इसका उपयोग केवल मनोरंजन के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि ज्ञानवर्धन के क्षेत्र में भी हो रहा है।

लिखित

(क) अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा फ़िल्म निर्माण केंद्र है। 'टॉय स्टोरी' में विभिन्न खिलौनों को सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया। बाद में इस फ़िल्म के सुधरे हुए रूप 'टॉय स्टोरी-2' तथा 'टॉय स्टोरी-3' भी बने। इसी प्रकार कुंग-फू पांडा' में एक भालू को

बहुत ही हास्यप्रद ढंग से पेश किया गया। भारत के तकनीकी कलाकारों ने तेनालीराम, हनुमान, गणेश, कृष्ण और बलराम, रामायण, छोटा भीम, रोल नम्बर 21 जैसी ऐनीमेशन फ़िल्में बनाकर अपना हुनर दिखाया है।

(ख) पश्चिमी देशों में कार्टून फ़िल्मों का आरंभ सन 1908 में हुआ था। तब पेरिस में 'हंप्टी-डंप्टी' नाम की एक छोटी फ़िल्म का निर्माण हुआ था। उसके बाद वहाँ कार्टून फ़िल्मों पर कई प्रकार के प्रयोग चलते रहे।

(ग) अधिकांश कार्टून फ़िल्मों में हास्यप्रद कथावस्तु और पात्रों को ही लिया जाता है, लेकिन आजकल गंभीर विषयों का चित्रांकन भी किया जा रहा है। भारत में बनी 'हनुमान' तथा 'भागमती' फ़िल्में इसी श्रेणी में आती हैं।

(घ) ऐनीमेशन तकनीक में सुधार के कारण अब इन फ़िल्मों के पात्र अधिक सजीव और वास्तविक दिखाई देते हैं। इस तकनीक में विकास का एक अद्‌वितीय नमूना देखने को मिला कार्टून फ़िल्म 'मैडागास्कर' में। इस ऐनीमेशन फ़िल्म में नवीनतम तकनीक का प्रयोग हुआ और अब तो पानी के अंदर भी ऐनीमेशन फ़िल्में बननी शुरू हो चुकी हैं।

(ङ) ऐनीमेशन की क्रियाओं को मुख्यत: तीन भागों में बाँटा जा सकता है—प्री-प्रोडक्शन, प्रोडक्शन एवं पोस्ट प्रोडक्शन।

(च) पोस्ट-प्रोडक्शन स्तर पर फ़िल्म को अंतिम रूप दिया जाता है। दृश्यों में तारतम्यता स्थापित की जाती है, अनावश्यक दृश्यों की काट-छाँट की जाती है तथा आवश्यक संपादन किया जाता है।

2. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓)
(घ) (✗) (ङ) (✓) (च) (✓)

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (द) (✓) (ख) (ब) (✓)
(ग) (द) (✓) (घ) (स) (✓)

(ङ) (ब) (✓)

भाषा से

1. (क) रोमांचकारी (ख) पौराणिक
   (ग) अद्वितीय (घ) परिवर्धित
   (ङ) बहुआयामी

2.

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
वैज्ञानिक	वि	विज्ञान	इक
विकसित	वि	विकास	इत
वास्तविक		वास्तव	इक
बेइंतहा	बे	इंतहा	अहा
अद्वितीय	अ	द्वितीय	ईय

3. (क) विकसित गुणवाचक
   (ख) ज़्यादा सार्वनामिक
   (ग) 1908 संख्यावाचक
   (घ) तीन संख्यावाचक
   (ङ) 1960 संख्यावाचक

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

एनीमेशन फ़िल्में कल्पना-शक्ति और तकनीक का संगम है। पहले केरैक्ट्र्स की कल्पना की जाती है अर्थात् केरैक्ट्र्स का रंग-रूप, चेहरा-मोहना, कद-काटी, डील-डौल कैसा होगा आदि।

फाइन आर्ट के कलाकार केरैक्ट्र्स का निर्माण करते है, फिर कंप्यूटर द्वारा उनमें हरकत पैदा की जाती है। यह समझिए की उन्हें कंप्यूटर द्वारा सजीव किया जाता है। ऐनीमेशन फिल्में बनाने के लिए पहले प्रत्येक 'फ्रेम' को कागज़ पर उतारना पड़ता था, परंतु आज यह समस्त कार्य कंप्यूटर द्वारा संभव है। पात्रों के चेहरों के हाव-भाव बनाना सबसे कठिन कार्य होता है। इस कार्य के लिए आज भी कागज़ पर कलाकारी दिखाने वाले निपुर्ण कलाकारों की मदद ली जाती है।

गहन सोच

मानव ने बेइंतहा वैज्ञानिक तरक्की की है। उसने कंप्यूटर बनाए, रोबोट बनाए, अंतरिक्ष यान बनाए, राजर बनाए और न जाने क्या-क्या जिनका सभी का जिक्र यहाँ मुश्किल है। ऐसे में मनोरंजन का क्षेत्र भी विज्ञान से कैसे अछूता रह सकता था। इस क्षेत्र में विज्ञान ने अपना कमाल दिखाकर इसे पहले से कहीं अधिक रुचिकर और रोमांचक बना दिया है। इसका एक नमूना है– एनीमेशन फिल्म।

2. संचार

छात्र/छात्राएँ कक्षा में 'एनीमेशन फिल्में कल्पना-शक्ति और तकनीक का संगम है।' इस विषय पर आपस में चर्चा करें।

3. वैश्विक जागयकता

आज घर-घर में कार्टून केरैक्ट्र्स की हँसी-ठिठोली, नोक-झोंक की आवाज सुनी जा सकती है। ऐनीमेंशन द्वारा बनाए गए मिकी माउस, डोरेमॉन, शिनचैन, स्पाइडर मैन, टॉम एंड जैरी जैसे कार्टून बच्चों के विशेष आकर्षण बिंदु है। इन कार्टून केरैक्ट्र्स का निर्माण अमेरिका जैसे विकसित देशों में हुआ है, लेकिन भारत भी इस लहर से अछूता नहीं है।

4. चित्र-वर्णन

छात्र/छात्राएँ दिए गए चित्र को देखकर 40-45 शब्दों में वर्णन कीजिए।

8. मंत्र

पाठ से

मौखिक

1. (क) भगत मंत्र से झाड़ने वाला था।

   (ख) डॉ० साहब का नाम डॉ० चड्ढा था।

   (ग) साँप ने डॉ० चड्ढा के बेटे कैलाश को डँस लिया था।

   (घ) कैलाश डॉ० चड्ढा का पुत्र था।

   (ङ) डॉ० साहब ने समझा कोई मरीज़ होगा।

लिखित

(क) बूढ़ा व्यक्ति डॉ० चड्ढा के पास अपने सात वर्षीय बेटे का इलाज करवाने के उद्देश्य से आया था।

(ख) डॉ० चड्ढा शाम के समय गोल्फ़ खेलने के लिए जा रहे थे इसलिए उन्होंने बूढ़े के पुत्र को देखने से मना कर दिया था।

(ग) मृणालिनी कैलाश से साँपों को दिखाने की ज़िद करने लगी। कैलाश मेहमानों की देखभाल में लगा हुआ था, इसलिए उसने साँप दिखाने से पहले मना कर दिया था।

(घ) साँप द्वारा काटे जाने पर डॉक्टर चड्ढा कैलाश की उँगली काटना चाहते थे। पर कैलाश नहीं माना क्योंकि उसे जड़ी पर पूरा विश्वास था।

(ङ) 'चड्ढा बाबू का घर उजड़ गया'' यह सुनते ही भगत तेज़-तेज़ कदमों से इसलिए चलने लगा क्योंकि उसका दिमाग कहता था मत जाओ, पर अंदर की आवाज़ आगे ठेलती थी। बूढ़े को यह लग रहा था कि कहीं उसे आने में देर तो नहीं हो गई।

(च) छात्र स्वयं उत्तर दें।

2. छात्र स्वयं करें।

3.

	किसने?	किससे कहा?
(क)	बूढ़ा भगत	डॉ० चड्ढा

(ख) डॉ० चड्ढा स्वयं मन में

(ग) बूढ़ा भगत आदमी से

(घ) बूढ़ा भगत डॉ० चड्ढा से

(ङ) बूढ़ा भगत डॉ० चड्ढा से

भाषा से

1. (क) (स) (✓) (ख) (द) (✓)
   (ग) (ब) (✓)
2. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

कभी-कभी समय का पाबंद होना गलत सिद्ध होता है। यह बिल्कुल सही है। इसका ज्वलंत उदाहरण हैं डॉ. चड्ढा जिनके समय के पाबंद होने के कारण भगत को अपने इकलौते बेटे की जान खोनी पड़ी है। धनी डॉक्टर चड्ढा इतने कठोर हैं कि वे भगत के बेटे को देखने से मना कर देते हैं, जिसके फलस्वरूप उसकी मौत हा जाती है।

गहन सोच

बूढ़े की आशा-निराशा में बदल गई। यह बिल्कुल सही बात है क्योंकि बूढ़े भगत बड़ी उम्मीद और आशा लेकर अपने छह बच्चों में केवल एक बीमार बच्चे को लेकर दो कहारों के साथ डोली लेकर उनके द्वार पर गया था लेकिन दुर्भाग्य की बात उस समय डॉ. चड्ढा गोल्फ खेलने वाले जाने वाले थे इस कारण उन्होंने भगत के बीमार बेटे को देखने से इनकार कर दिया। जिस कारण बूढ़े की आशा निराशा में बदल गई।

2. समस्या-समाधान

कोई भी व्यक्ति इतना कठोर नहीं हो सकता कि वो अपने खेल को प्राथमिकता दे और बीमार का इलाज नहीं करें। डॉक्टर को तो भगवान माना जाता है जिसका प्रमुख कार्य धर्म किसी की जान बचाना होता है न कि बीमार को मर जाने दें।

3. भारत का ज्ञान

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से भारत के प्रसिद्ध लेखक और उनकी प्रमुख रचनाओं की एक सूची तैयार करें।

4. संचार

छात्र/छात्राएँ इस विषय पर कक्षा में चर्चा करें।

9. बीज-पौध का जन्म

पाठ से

मौखिक

1. (क) मिट्टी के नीचे बहुत दिनों तक बीज पड़ा रहता है। धीरे-धीरे बीज का ढक्कन दरक जाता है और दो सुकोमल पत्तियों के बीच अंकुर बाहर निकलता है। अंकुर का एक अंश नीचे माटी में मज़बूती से गड़ा होता है और दूसरा अंश माटी भेदकर ऊपर की ओर उठता है।

   (ख) पेड़-पौधे जड़ के द्वारा माटी से रसपान करते हैं, इनके दाँत नहीं होते, इसलिए वे केवल तरल द्रव्य या वायु से भोजन ग्रहण करते हैं।

   (ग) लेखक ने माँ की ममता को पारस पत्थर की मणि के समान माना है।

   (घ) फूलों की बहार छाते ही पड़े-पौधे अपने बंधु-बांधवों को स्नेहसिक्त वाणी में पुकारकर कहते हैं—कहाँ हो मेरे बंधु, मेरे बांधव, आज मेरे घर आओ।

(ङ) मधुमक्खी के आगमन से पेड़-पौधों का उपकार होता है। मधुमक्खियाँ एक फूल के पराग-कण दूसरे फूल पर ले जाती हैं। पराग-कण के बिना बीज पक नहीं सकता।

(च) पौधे का परीक्षण करने के लिए गमले को औंधा लटकाया गया। परिणामस्वरूप, पौधे की सब पत्तियाँ और डालियाँ टेढ़ी होकर ऊपर की ओर उठ आईं तथा जड़ घूमकर नीचे की ओर लटक गई।

लिखित

(क) जब हम श्वास-प्रश्वास ग्रहण करते हैं तब प्रश्वास के साथ एक प्रकार की विषाक्त वायु बाहर निकलती है, जिसे अंगारक वायु कहते हैं। अगर यह जहरीली वायु पृथ्वी पर इकट्ठी होती रहे तो तमाम जीव-जंतु कुछ ही दिनों में उसका सेवन करके नष्ट हो सकते हैं।

(ख) पेड़-पौधे तरल द्रव्य या वायु से भोजन ग्रहण करते हैं। वे जड़ के द्वारा माटी से रसपान करते हैं। इसके अलावा पेड़ के पत्ते हवा से आहार ग्रहण करते हैं।

(ग) पेड़-पौधे प्रकाश के बिना जीवित नहीं रह सकते। पेड़-पौधों की कोशिश यही रहती है कि किसी तरह उन्हें थोड़ा-सा प्रकाश मिल जाए। सूर्य किरण का परस पाकर ही पेड़ पल्लवित होता है। पेड़-पौधे के रेशे-रेशे में सूरज की किरणें आबद्ध हैं। इस प्रकार प्रकाश ही जीवन का मूलमंत्र है।

(घ) फूलों में बीज फलता है। अपने शरीर का रस पिलाकर पेड़-पौधे बीजों का पोषण करते हैं। अब अपनी ज़िंदगी के प्रति उनमें मोह-माया नहीं रहती। संतान की खातिर पेड़ तिल-तिलकर सब कुछ लुटा देता है।

(ङ) पेड़-पौधे अपनी संतान की खातिर तिल-तिलकर सब कुछ लुटा देते हैं। जो शरीर कुछ दिन पहले हरा-भरा था, अब वह बिलकुल सूख गया है। अपने ही शरीर का भार उठाने की शक्ति क्षीण हो

चली है। पहले हवा बयार बहती हुई आगे बढ़ जाती थी। पत्ते हवा के संग क्रीड़ा करते थे। छोटी-छोटी डालियाँ ताल-ताल पर नाच उठती थीं। अब सूखा पेड़ हवा का आघात सहन नहीं कर सकता। हवा का मात्र एक थपेड़ा लगते ही वह थर-थर काँपने लगता है। एक-एक करके सभी डालियाँ टूट पड़ती हैं। अंत में एक दिन अकस्मात पेड़ जड़सहित ज़मीन पर गिर पड़ता है। इस तरह संतान के लिए अपना जीवन न्योछावर करके पेड़ समाप्त हो जाता है।

(च) कुछ पौधे एक वर्ष के बाद ही मर जाते हैं। लेकिन सब पौधे मरने से पहले संतान छोड़ जाते हैं। बीज ही पेड़-पौधों की संतान हैं। बीज की सुरक्षा और सार-सँभाल के लिए पेड़ फूल की पंखुड़ियों से घिरा एक छोटा-सा घर तैयार करता है।

2. (क) जीवित रहने के लिए बेल-लताओं के लिए प्रकाश आवश्यक है।

(ख) छाया से लेखक का अभिप्राय प्रकाश के अभाव से है।

(ग) यहाँ लेखक ने प्रकाश के महत्व को दर्शाया है।

3. पेड़ के पत्तों पर जब सूर्य का प्रकाश पड़ता है, तब पत्ते सूर्य-ऊर्जा के सहारे अंगारक वायु से अंगार निःशेष कर डालते हैं और वही अंगार पेड़ के शरीर में प्रवेश करके उसका संवर्धन करते हैं।

4. पेड़-पौधे प्रकाश चाहते हैं। प्रकाश न मिलने पर ये बच नहीं सकते। पेड़-पौधों की कोशिश यही रहती है कि किसी तरह उन्हें थोड़ा-सा प्रकाश मिल जाए।

5. (क) (स) (✓) (ख) (ब) (✓)

(ग) (अ) (✓) (घ) (अ) (✓)

भाषा से

1. चिड़ीमार की बीवी ने डरे हुए तोते को हाथ में लिया और उसे सहलाते हुए बोली, ''कितना छोटा तोता है, इसका तो एक निवाला भी नहीं होगा। इसे मारना फ़िजूल है। हीरामन ने कहा, ''माँ! मुझे मत मारो।

राजा को बेच दो, तुम्हें बहुत पैसे मिलेंगे।'' तोते को बोलते हुए सुनकर वे हक्के-बक्के रह गए। थोड़ी देर बाद अचरज़ से उबरे तो पूछा कि वे उसकी कितनी कीमत माँगें? हीरामन ने कहा, यह मुझ पर छोड़ दो। राजा कीमत पूछे तो कहना कि तोता अपनी कीमत खुद बताएगा।

2. अचानक–आज विद्यालय में अचानक मेरी तबीयत खराब हो गई।

सचमुच–सचमुच आज सभी बाजार बंद हैं।

बेकार–देश के लिए सैनिकों का बलिदान बेकार नहीं जाएगा।

दफ्तर–मेरे पिता जी का दफ्तर घर से थोड़ी ही दूरी पर है।

गंभीरता–शहर में तनाव की स्थिति को देखते हुए प्रशासन ने इसे गंभीरता से लिया।

4.

एकार्थी शब्द	**अनेकार्थी शब्द**
दरवाज़ा	अंक–संख्या, गोद
दवात	पत्र–पत्ता, चिट्ठी
खिड़की	मान–सम्मान, माप
मेज़	सोना–शयन, पदार्थ
कुर्सी	दल–समूह, पत्ता
कक्षा	कुल–सब, वंश
पक्ष	नाना–माता का पिता, विविध
	पद–पैर, ओहदा
	वर्ण–अक्षर, रंग
	वर–वरदान, दूल्हा

5. **भाववाचक संज्ञा शब्द**–अच्छाई, कोमलता, थकावट, बुराई, गुलाबीपन, कठोरता, सहजता, समानता, भावुकता।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

पेड़-पौधे हमारे सच्चे मित्र हैं, जो हमें प्राणवायु ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। यह कहना बिल्कुल सही है।

गहन सोच

जरा विधात्री की करुणा का चमत्कार तो देखों– जो जीव-जंतुओं के लिए जहर है, पेड़-पौधे उसी का सेवन करके उसे पूर्णतया शुद्ध कर देते हैं। पेड़ के पत्तों पर जब सूर्य का प्रकाश पड़ता है तब पत्ते सूर्य-ऊर्जा के सहारे 'अंगारक' वायु से अंगार निःशेष कर डालते है। और वही अंगार पेड़ के शरीर में प्रवेश करके उसका संवर्धन करते हैं। पेड़-पौधे प्रकाश चाहते हैं। प्रकाश न मिलने पर ये बच नहीं सकते। पेड़ पौधों की कोशिश यही रहती है कि किसी तरह उन्हें थोड़ा-सा प्रकाश मिल जाए।

2. कल्पनात्मक गतिविधि

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर लिखें।

3. संचार

छात्र/छात्राएँ इस विषय पर चर्चा करें।

4. रचनात्मक गतिविधि

छात्र/छात्राएँ भारत के विभिन्न स्थानों के स्थानों के प्राकृतिक दृश्यों का संकलन करके एक भित्ति-पत्रिका बनाएँ।

10. सुभान खाँ

पाठ से

मौखिक

1. (क) सुभान दादा की लंबी, सफ़ेद, चमकती दाढ़ी में नन्हीं उँगलियाँ

घुमाते हुए बालक ने उनसे पूछा, ''क्या आपका अल्लाह पश्चिम में रहता है? वह पूरब में क्यों नहीं रहता?''

(ख) सुभान दादा ने पश्चिम की ओर खड़े होकर ही नमाज़ पढ़ने का कारण यह बताया कि पश्चिम की ओर से मुल्क में अल्लाह के रसूल आए थे। जहाँ रसूल आए थे वहाँ हमारे तीरथ हैं। हम उन्हीं तीरथों की ओर मुँह करके अल्लाह को याद करते हैं।

(ग) सुभान दादा के कहे अनुसार अल्लाह मज़दूरी भर पूरा काम न करने से नाराज़ हो जाते हैं।

(घ) सुभान दादा को नमाज़ पढ़ते देखकर लेखक को ऐसा मालूम होता था जैसे उनके अल्लाह वहाँ आ गए हों।

(ङ) ईद-बकरीद को न सुभान दादा हमें भूल सकते थे, न होली-दीपावली को हम उन्हें। होली के दिन नानी अपने हाथों से पुए-खीर और मिठाई परोसकर सुभान दादा को खिलाती थीं और तब मैं ही अपने हाथों से अबीर लेकर उनकी दाढ़ी मलता था।

(च) छुट्टी में शहर के स्कूल से लौटने पर सुभान दादा ने लेखक को सौगात में छुहारे दिया था। यह सौगात वे अरब से लाए थे।

लिखित

(क) सुभान खाँ का बदन लंबा-चौड़ा और तगड़ा था। उनकी पेशानी चौड़ी, भौहें बड़ी, सघन और उभरी हुई थीं। उनकी नाक साधारण ढंग से नुकीली, दाढ़ी सघन इतनी लंबी कि छाती तक पहुँच जाए।

(ख) नौ साल की आयु होने तक लेखक मुहर्रम के दिन मुसलमान बच्चों की तरह ताज़िए के चारों ओर रंगीन छड़ी लेकर कूदते थे और गले में गंडे पहने।

(ग) ''मज़दूरी भर पूरा काम न करने से अल्लाह नाराज़ हो जाएँगे।'' सुभान खाँ ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि काम और अल्लाह–ये ही दो चीज़ें संसार में उनके लिए प्यारी हैं। काम करते हुए वे अल्लाह को नहीं भूलते थे और अल्लाह से फुर्सत पाकर फिर झट काम में जुट जाना पवित्र कर्तव्य समझते थे।

(घ) मुहर्रम के दिन मैं नहा-धोकर, पहन-ओढ़कर तैयार था कि सुभान दादा मुझे लेने पहुँच गए। मुझे अपने कंधे पर लेकर वे अपने गाँव पहुँचे। वहाँ सुभान दादा की बूढ़ी बीवी ने मेरे गले में एक बद्धी डाल दी, कमर में घंटी बाँध दी, हाथों में दो लाल छड़ियाँ दे दीं और उन बच्चों के साथ मुझे लिए दादी करबला की ओर चलीं।

(ङ) इस पाठ में होली-दीवाली, ईद-बकरीद तथा मुहर्रम की घटनाओं में हिंदु-मुसलिम एकता को दर्शाया गया है।

2. (क) (अ) (✓) (ख) (स) (✓)

(ग) (द) (✓) (घ) (अ) (✓)

3. (क) प्रस्तुत वाक्य सुभान खाँ के बारे में कहा गया है।

(ख) काम करते हुए अल्लाह को नहीं भूलते थे और अल्लाह से फुर्सत पाकर फिर झट काम में जुट जाना पवित्र कर्तव्य समझते थे। काम और अल्लाह का यह सामंजस्य उनके दिल में प्रेम की मंदाकिनी बहाता रहता था।

4. छात्र स्वयं करें।

भाषा से

1. (क) (स) (✓) (ख) (स) (✓)

(ग) (स) (✓) (घ) (अ) (✓)

2.

अल्लाह	–	ईश्वर	पेशानी	–	माथा
नमाज़	–	प्रार्थना	मुल्क	–	देश
ज़ियारत	–	तीर्थयात्रा	सवाब	–	पुण्य
ख्वाहिश	–	इच्छा	कुर्बानी	–	भेंट

3. छात्र स्वयं करें।

4.

शब्द	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
प्रतिष्ठित	प्रतिष्ठा	इत
ईमानदारी	ईमानदार	दार

गुस्सेवर	गुस्सा	वर
नीलापन	नीला	अन
धारीदार	धारी	दार
मासूमियत	मासूम	इयत
सज्जनता	सज्जन	ता
रोमांचकारी	रोमांच	ई

5. (क) ''उस पर अल्लाह ने ही रंग दे रखा था, बबुआ। अल्लाह की उन पर खास मेहरबानी थी, उनका-सा नसीब हम मामूली इनसानों का कहाँ?''

   (ख) आइए, स्वागत है। कोई कालीन खरीदेंगे? वह उन लोगों को अंदर कमरे में ले जाते हुए बोला, उस कमरे में रंग-बिरंगे रेशमी और जादुई कालीन रखे थे।

6. (क) सर्वनाम – वह, सार्वनामिक विशेषण – वह बच्चा

   (ख) सर्वनाम – ये, सार्वनामिक विशेषण – ये स्वादिष्ट

   (ग) सर्वनाम – यह, सार्वनामिक विशेषण – यह खूबसूरत

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

सुभान खाँ वास्तव में एक नेकदिल और सच्चे इनसान थे। पाठ के आधार पर ऐसा कहा जा सकता है, क्योंकि ईद-बकरीद पर न सुभान दादा हमे भूलते सकते थे, न होली-दीवाली को हम उन्हें उनमें सर्व धर्म समभाव तथा मानवता कूट-कूटकर भरी हुई थी। उन्होंने मस्जिद में कुर्बानी को सख्त लहजे में मना करके इसकी मिशाल कायम कर दी।

गहन सोच

दंगे होने के कई कारण होते है; जैसे– खुद के संप्रदाय को न समझना, अपने संप्रदाय के प्रति आसक्ति जो संप्रदाय अपने लोगों में डर का भाव पैदा करता है वही लोग दूसरों को दबाने का काम करते हैं। हीन भावना की वजह से दूसरों पर हुकूमत करने का भारी दवाब आदि।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता से दो कर्मवीर महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़ें तथा उनसे प्रेरणा प्राप्त करें।

3. रचनात्मक गतिविधि

छात्र/छात्राएँ स्वयं अपने मित्र को जो छात्रावास में रह रहा है पत्र लिखकर कर्मवीर बनने के लिए प्रेरित करें।

4. साहित्य सराहना

छात्र/छात्राएँ वर्णन करें।

11. संस्कृति और सभ्यता

पाठ से

मौखिक

1. (क) सभ्यता मनुष्य का वह गुण है, जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति मनुष्य का वह गुण है, जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, दया, ममता और परोपकार सीखता है; गीत–नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता हासिल करता है।

   (ख) रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज़, लंबी–चौड़ी सड़कें और बड़े–बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक–ये सभ्यता की पहचान हैं।

   (ग) पाठ में आदमी के भीतर छह विकारों के बारे में बताया गया है। ये हैं–काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर। ये सभी विकार प्रकृति के दिए हुए हैं।

(घ) संस्कृति आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस में मिलते हैं, तब उन दोनों की संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं।

(ङ) भारतीय संस्कृति पर अनेक संस्कृतियों का प्रभाव रहा है और उन्हीं प्रभावों को ठीक से अपने भीतर पचाकर भारतीय संस्कृति विशाल और उदार हो गई है। यही कारण है कि आज भारतीय संस्कृति सारी दुनिया का आईना बन सकती है।

लिखित

(क) सभ्यता मनुष्य का वह गुण है, जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति मनुष्य का वह गुण है, जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है; दया, ममता और परोपकार सीखता है; गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता हासिल करता है। रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज़, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक– ये सभ्यता की पहचान हैं। मगर संस्कृति इन सबसे कहीं अलग है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है; मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। अच्छे भोजन का सामान हम सभ्यता के ज़रिये पैदा करते हैं, लेकिन जिस ढंग से हम भोजन तैयार करते हैं और जिस कला से हम उसे खाते हैं, वह हमारी संस्कृति कहलाती है।

(ख) प्राचीन समय में आदमी को जब घर बनाना नहीं आता था; जब वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में वास करता था; जब उसे खेती करना भी नहीं आता था और वह कंद-मूल या जंगली जीवों का गोश्त खाकर गुज़ारा करता था; जब उसे कपड़ा बुनना भी नहीं आता था; वह या तो नंगा रहता था या पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल पहनकर अपनी लाज छिपाता था। इस अवस्था को मनुष्य की असभ्यता की हालत कहते हैं। लेकिन इस अवस्था से निकलकर आदमी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, त्यों-त्यों वह सभ्य होता गया। यानी जब आदमी खेती करके अनाज उपजाने लगा, तब वह असभ्यता से निकलकर सभ्यता में आने लगा।

(ग) प्रत्येक सभ्य आदमी सुसंस्कृत भी हो सकता है, ऐसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अच्छी-से-अच्छी पोशाक पहननेवाला आदमी भी तबीयत से नंगा हो सकता है और नंगा होना संस्कृति के खिलाफ़ बात है।

(घ) आदमी के अंदर जो छह विकार छिपे हुए हैं, उन्हें बेरोक छोड़ दिए जाएँ तो आदमी इतना गिर जाएगा कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाएगा। जो आदमी इन विकारों पर जितना ज़्यादा काबू कर पाता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही ऊँची समझी जाती है।

(ङ) संस्कृति की दृष्टि से वह जाति या वह देश बहुत ही धनी समझा जाता है जिसने ज्यादा-से-ज्यादा देशों या जातियों की संस्कृति का विकास किया हो।

(च) जब आर्य भारत में आए और द्रविड़ जाति से मिलकर उन्होंने भारतीय संस्कृति की नींव डाली। भारतीय संस्कृति जब कुछ पुरानी हो गई तब उसके खिलाफ़ महात्मा बुद्ध और महावीर ने विद्रोह किया जिसके फलस्वरूप बहुत-सी रूढ़ियाँ दूर हुईं और यह संस्कृति एक बार फिर से नवीन हो गई।

2. (क) प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा संस्कृति के महत्व को स्पष्ट किया गया है। संस्कृति मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है; दया, ममता और परोपकार सीखता है; गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता हासिल करता है। इसलिए संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाठ-बाट नहीं, विनय और विनम्रता है।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि सभ्यता निरंतर विकास की ओर अग्रसर रही है और इस कारण संस्कृति पर भी इस विकास का प्रभाव पड़ रहा है। आज दुनिया में बड़े-बड़े बम और दूसरे हथियार बन रहे हैं क्योंकि सभ्यता

के मामले में दुनिया बहुत आगे बढ़ गई है, लेकिन संस्कृति पुकार-पुकारकर कह रही है कि इन बमों और हथियारों को काम में मत लाओ क्योंकि इससे दुनिया बर्बाद हो जाएगी।

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (ब) (✓) (ख) (अ) (✓)
(ग) (स) (✓) (घ) (द) (✓)
(ङ) (क) (✓)

भाषा से

1.

भीतरी	गुणवाचक
बाहरी	गुणवाचक
लंबी-चौड़ी	गुणवाचक
अधिकता	गुणवाचक
सुसंस्कृत	गुणवाचक
विनम्रता	गुणवाचक

2.

गोश्त	– मांस	अधिकता	– बहुतायत	विनय	– शिष्ट
उन्नति	– प्रगति	सबूत	– प्रमाण	मूर्ति	– प्रतिमा
हालत	– स्थिति	तबीयत	– सेहत	रिवाज़	– प्रथा

3.

शब्द	**मूलशब्द**	**प्रत्यय**	**शब्द**	**मूलशब्द**	**प्रत्यय**
पशुत्व	पशु	त्व	विनम्रता	नम्र	ता
सभ्यता	सभ्य	ता	धार्मिक	धर्म	इक
अधिकता	अधिक	ता	भारतीय	भारत	ईय

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

हाँ! मैं यह मानता हूँ कि संस्कृति मनुष्य का वह गुण है, जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है। क्योंकि संस्कृति और सभ्यता ये दोनों शब्द है और इनके मायने भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति मनुष्य का वह गुण है, जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है। दया, ममता और परोपकार सीखता है, गीत, नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता हासिल करता है।

गहन सोच

प्रत्येक सभ्य आदमी सुसंस्कृत भी होता है, ऐसा नहीं कहा जा सकता; क्योंकि अच्छी-से-अच्छी पोशाक पहनने वाला आदमी भी तबियत से नंगा हो सकता है और नंगा होना संस्कृति के खिलाफ बात है। संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाठ-बाट नहीं, विनय और विनम्रता है।

हाँ! हम कह सकते है कि सभ्यता और संस्कृति दो अलग-अलग अवधारणाएँ हैं। एक कहावत है कि सभ्यता वह है जो हमारे पास है, लेकिन संस्कृति का वह गुण है, जो हममें छिपा हुआ है। हमारे पास घर होता है; कपड़े-लत्ते होते हैं; गायें, भैंसें, बैल, घोड़े, हाथी, मोटर और हवाई जहाज भी होते हैं, मगर ये सारी वस्तुएँ हमारी सभ्यता के सबूत हैं जिनसे यह जाना जा सकता है कि जिंदगी की मोटी और बाहरी सुविधाएँ हमने कहाँ तक हासिल की है। लेकिन संस्कृति इतने मोटे तौर से दिखाई नहीं देती, वह बहुत ही सूक्ष्म और महीन है और वह हमारी प्रत्येक पसंद और आदत में छिपी रहती है। मकान बनाना सभ्यता का काम है, लेकिन हम मकान का कौन-सा नक्शा पसंद करते है– यह हमारी संस्कृति बतलाती है।

2. वैश्विक जागरूकता

छात्र/छात्राएँ इसका उत्तर सोचकर बताएँ।

3. संचार

छात्र/छात्राएँ 'भारत सभ्यता और संस्कृति का उद्‌गम स्थल है।' इस विषय पर मित्रों के साथ परिचर्चा करें।

12. बहुत दिनों के बाद

पाठ से

मौखिक

1. (क) बहुत दिनों के बाद कवि ने इस बार पकी-सुनहली फ़सलों की मुसकान देखा।

(ख) कोकिलकंठी तान से आशय है धान कूटनेवाली किशोरियों की आवाज़। कवि ने धान कूटनेवाली किशोरियों की तान को कोकिलकंठी तान कहा है।

(ग) कविता में गाँव की धूल को चंदन के रंग की बताया गया है।

(घ) कविता में 'बहुत दिनों के बाद' वाक्यांश का प्रयोग बार-बार इसलिए किया गया है क्योंकि कवि काफ़ी दिनों के बाद अपने ग्राम जाते हैं।

लिखित

(क) पकी-सुनहली फ़सलों की मुसकान से कवि का आशय खेत में लगी पकी हुई फ़सलों से है जो अब पक जाने के कारण सुनहले रंग का हो गया है।

(ख) कवि ने जी भरकर मौलसिरी के ढेर सारे ताज़े टटके फूल सूँघे।

(ग) गाँव की चंदनवर्णी धूल का स्पर्श पाकर कवि को अत्यंत सुखद अनुभूति हुई होगी क्योंकि ऐसा अनुभव उन्हें काफ़ी दिनों के बाद हुआ।

(घ) कवि ने अपने गाँव की धरती पर काफ़ी दिनों के बाद मौलसिरी के ताजे फूलों का गंध, खेतों में पकी सुनहली फ़सलों की मुसकान, धान कूटती किशोरियों की कोकिलकंठी तान, अपने गाँव

की पगडंडी की चंदनवर्णी धूल, कमल के बीज खाए और गन्ने चूसे। इस प्रकार कवि को अपने गाँव की धरती पर एक साथ गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श काफी दिनों के बाद अनुभव हुआ।

2-3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (द) (✓) (ख) (अ) (✓)
(ग) (ब) (✓) (घ) (अ) (✓)

भाषा से

1. दिन – दिवस धूल – गर्द भू – भूमि
कोकिल – मधुर गन्ना – ईख ताजा – टटका

2. पगडंडी – प + अ + ग + अ + ड + अ + न + ड + ई
फसल – फ + अ + स + ल + अ
मुसकान – म + उ + स + अ + क + ा + न + अ
चंदनवर्णी – च + अ + न + अ + न + द + न + अ + व + अ + र् + न + ई

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

'अबकी बार मैंने बहुत दिनों के बाद जी भर देखी पकी-सुनहली फसलों की मुसकान' कवि ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि कवि ग्राम्य जीवन का उज्ज्वल पक्ष देखा है और वह ग्राम्य अंचल में पहुँचकर आत्मिक संतोष और आनंद महसूस करता है।

गहन सोच

कवि ने बहुत दिनों के बाद गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ

बहुत दिनों बाद इसलिए भोगा होगा कि इस वर्ष उसने फसलों को भली-भाँति लहलहाते देखा, मौलसिरी के ढेर-ढेर से ताजे फूलों की सुंगध को महसूस किया, गाँव की पंगडडियों की सोंधी मिट्टी की महक सूँघा, गन्ने जी भरकर चूसे, जीभर कर ताल मखाना खाया, धान कूटते हुए ग्रामीण किशोरी बालाओं की कोकिलकंठी तान बहुत दिनों बाद कवि ने सुना है।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ नागार्जुन की अन्य रचनाएँ पढ़ें और गद्य और पद्य की अलग-अलग सूची तैयार करें।

3. ध्वन्यात्मक गतिविधि/मौखिक वर्णन

छात्र/छात्राएँ नागार्जुन की कविताओं का कक्षा में सस्वर वाचन करें।

4. चित्र-वर्णन

छात्र/छात्राएँ दिए गए चित्र का 40-45 शब्दों में वर्णन करें।

13. फिर-फिर उठती है माटी की लौ

पाठ से

मौखिक

1. (क) शहरी जीवन में मिट्टी से बना मटका, गमले और दीये अभी भी बची हुई हैं।

   (ख) कुम्हार ने माटी के साथ अपना रिश्ता बहुत गहरे लगाव और प्रेम का बनाया है।

   (ग) 'मृच्छकटिकम्' यानी मिट्टी की गाड़ी का वर्णन हमारे साहित्य और आख्यानों में आया है।

   (घ) लेखक को पिछले वर्ष एक परिवार ने दीवाली पर माटी की एक थाली में माटी के लक्ष्मी-गणेश और कुछ दीयों समेत खील-बताशे भेजे थे।

(ङ) सौंख की खुदाई में माटी की जो नन्हीं-नन्ही मूर्तियाँ और सज्जात्मक चीज़ें मिली थीं, वे मथुरा के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

(च) बहुत परिष्कृत ढंग से पका ली गई चीज़ें सिरेमिक या स्टूडियो पॉटरी के क्षेत्र में आती हैं जो मिट्टी से ही बनी होती हैं।

लिखित

(क) कुंभकार के पेशे को स्वयं कुंभकारों की नयी पीढ़ियाँ चाव से इसलिए नहीं अपनाना चाहतीं क्योंकि उनकी स्थिति पहले जैसी ही है। सच्चाई यह है कि और चीज़ों की कीमतें चाहे जितनी बढ़ी हों लेकिन मिट्टी के बरतनों और मिट्टी से बनाई गई चीज़ों की कीमतें बढ़ी भी हैं तो बहुत ज़्यादा नहीं।

(ख) लेखक के एक मित्र माटी के कुछ गमले खरीद रहे थे और सात-आठ-दस रुपये के गमलों की कीमत भी वह आदतन कम करा रहे थे। इस पर उनकी बेटी ने धीरे-से कहा, ''इनकी कीमतें क्यों कम करा रहे हैं?'' लेखक को उसकी यह बात अच्छी लगी। ऐसा इसलिए क्योंकि कुंभकार के हिस्से में सचमुच बहुत थोड़ी-सी राशि आती है।

(ग) दीवाली में मिट्टी के दीये ही सबसे ज्यादा दिखाई देते हैं। चाहे धनी हो या निर्धन, माटी का दीया ही सब घर में रखना चाहते हैं। इसे शुभ लक्षण इसलिए माना जाता है क्योंकि अगर ये किसी लहर के तहत भी बनवाई जा रही हों तो भी क्या हर्ज़ है।

(घ) माटी की मूर्तियाँ बनानेवाले कलाकारों द्वारा अद्भुत चित्र, भित्ति-चित्र और मूर्ति शिल्प की बहुत बड़ी दुनिया है। ये कलाकार भारत महोत्सवों में विदेश भी हो आए हैं और अपनी कला से उन्होंने विदेशी दर्शकों को भी चमत्कृत किया है। वे अपनी कला का सृजन किसी प्रलोभन में नहीं करते बल्कि वे इसे अपने जीवन का अभिन्न अंग मानते रहे हैं।

(ङ) माटी के कुल्हड़ों की जगह कागज़ के गिलास आ गए हैं। माटी का कुल्हड़ अन्य चीज़ों की बनिस्बत कम गंदगी पैदा करता है।

ज़्यादा-से-ज़्यादा वह टूट-फूटकर अपने कुछ टुकड़े रास्ते में छितरा देता है, जो अंततः माटी में ही मिल जाते हैं।

(च) दीवाली एक ऐसा त्योहार है, जब माटी के दीये, माटी के लक्ष्मी-गणेश की मूर्तियाँ और सज्जा की तमाम दूसरी चीज़ों की ओर हमारा ध्यान जाता है और आग्रहपूर्वक ही हम माटी से बनाई गई ये चीज़ें खरीदते हैं। दीवाली से जुड़ी हुई और सब चीज़ों में लेखक को यह पक्ष सबसे अधिक प्रिय लगता है।

2. प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से मिट्टी से कुंभकार के अटूट रिश्ते को दर्शाया गया है। कुंभकार अपने बनाए मिट्टी के बरतनों इत्यादि से बहुत ज्यादा राशि की उम्मीद कभी नहीं करता है। उसने कभी भी माटी से अपना रिश्ता अहंकारवाला बनाया ही नहीं। बल्कि उसका रिश्ता माटी के साथ बहुत गहरे लगाव और प्रेम का रहा है। बिना उस प्रेम और लगाव के माटी की मूरतें संभव नहीं।

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (अ) (✓) (ख) (ब) (✓)
(ग) (द) (✓) (घ) (ब) (✓)
(ङ) (अ) (✓)

भाषा से

1.

कुंभकार	–	कुम्हार	कीमत	–	मूल्य
माटी	–	मिट्टी	पेशा	–	धंधा
धूल	–	गर्द	प्रतिमा	–	मूर्ति

2. (क) दिया (देना) रजत ने मुझे पुस्तक खरीदने के लिए पैसे दिए।
दीया (दीप) दीवाली पर दीये जलाए जाते हैं।

(ख) ओर (तरफ़) मेरे घर के दायीं ओर रमेश का घर है।
और (तथा) मैं और रमेश साथ विद्यालय जाते हैं।

(ग) कली (अधखिला फूल) बाग में गुलाब की कलियाँ खिली हैं।
काली (देवी) मेरे घर के पास काली माता का मंदिर है।

3. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

कई आधुनिक घरों में माटी के बड़े-बड़े भटके भी सजें हुए मिलेंगे, जो कभी अन्न रखने के काम आया करते थे, लेकिन माटी की चीजों के इस प्रचलन से यह नहीं मान लेना चाहिए कि हमारे कुंभकार की हालत बेहतर हो गई है। वह तो लगभग जहाँ की तहाँ है और कोई आँकड़ें तो उपलब्ध नहीं है; लेकिन यह एक सच्चाई है कि अब कुंभकार के पेशे को स्तप कुंभकार की नई पीढ़ियाँ चाव से नहीं अपनाना चाहती है। यह भी एक सच्चाई है कि और चीजों की कीमतें चाहे जितनी भी बढ़ी हों, लेकिन मिट्टी के बरतनों और मिट्टी से बनाई गई चीजों की कीमतें बढ़ी भी है तो बहुत ज्यादा नहीं।

गहन सोच

कबीर ने भले ही कहा हो– माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौदे मोय।
इक दिन ऐसा आएगा, मैं रौदूँगी तोय।।

लेकिन कुम्हार ने माटी से अपना रिश्ता कभी अहंकार वाला बनाया ही नहीं। उसका रिश्ता तो इसके साथ एक बहुत गहरे लगात और प्रेम का रहा है। बिना उस प्रेम और लगात के माटी की मूरतें संभव ही कहाँ होती। कुंभकार की माटी ने इस देश में एक-से-एक चमत्कार प्रस्तुत किए हैं।

2. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ अपने जीवन में मिट्टी की किस-किस वस्तु का उपयोग किया है। यह सोचकर लिखें।

3. विषय संवर्धन गतिविधि

माटी के बरतनों और माटी की मूर्तियों की एक सुदीर्घ परंपरा हमारे देश में रही है। माटी का दिया तो सदियों से बहुतेरों घरो में जलता ही रहा है और आज भी जलता है। आधुनिक समाज ने वैज्ञानिक उपकरणों की बहुलता के बावजूद मिट्टी से बनी वस्तुओं से मुँह नहीं फेरा है। आधुनिक जमाने में भी माटी की यह महिमा हमारे देश में कम नहीं हुई, इसे गनीमत ही समझिए। आधुनिक उपकरणों ने शहरी जीवन में माटी की जगह भले ही छीनी हो, लेकिन यहाँ भी कम-से-कम पानी से भरा मटका अभी भी बचा हुआ है, जिसका पानी पीना बहुतों को अच्छा लगता है। माटी के गमले भी क्या शहर, क्या गाँव, सब जगह दिखाई पड़ते हैं। शहरों में तो हर गली-मुहल्ले में रेहड़ी पर भी मिट्टी के गमले बेचने वाले मिल जाएँगे। माटी की सज्जात्मक वस्तुएँ भी शहरों में काफी बिकने लगी हैं।

4. कला समेकन

छात्र/छात्राएँ दीपावली पर जलते हुए मिट्टी के दीपों का चित्र बनाएँ।

14. देशप्रेम के दाम!

पाठ से

मौखिक

1. (क) यह कहानी सन 1942 की है यह कहानी उड़ीसा राज्य से संबंधित है।

   (ख) नारायण बाबू के बच्चे को तेज़ बुखार था और उन्हें पुत्र-स्नेह की ऊष्मा मिल रही थी, इस कारण वे बीमार बच्चे को छोड़कर नहीं जा सके।

   (ग) पत्नी की मृत्यु के बाद नारायण बाबू ने बड़ी मुश्किल से सनातन की परवरिश करके उससे वकालत की पढ़ाई करवाई।

   (घ) बेटे ने श्रमिकों की हड़ताल तुड़वाने तथा बहू ने अपना ट्रांसफर रुकवाने की सिफारिश नारायण बाबू से करने को कहा था।

लिखित

(क) नारायण बाबू अपने बीमार बेटे सनातन को देखने घर आए थे। घंटे भर में वह जगह छोड़कर उन्हें अन्यत्र चले जाना था, लेकिन वे इस निर्देश को भुला बैठे। सनातन को गोद में लेकर रातभर बैठे रहे। पुलिस ने चारों तरफ से मकान घेर रखा था, इसलिए वे पकड़े गए।

(ख) ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध जनचेतना जगाने के इरादे से नारायण बाबू भूमिगत हो चुके थे। इसलिए वे आधी रात में घंटे-दो-घंटे के लिए ही घर आ पाते थे।

(ग) सनातन और मधुमिता अपने निजी स्वार्थों के कारण नारायण बाबू से सिफारिश करने की अपेक्षा रखते थे।

(घ) सनातन और मधुमिता के स्वभाव में आए परिवर्तन का कारण उनका निजी स्वार्थ था। इससे उनके चरित्र का स्वार्थ उजागर होता है।

(ङ) आज़ादी मिलने के बाद देशवासियों का चरित्र इसलिए बदल गया क्योंकि अधिकांश लोग भोग का जीवन जीने लगे। त्याग की बातें औरों को उपदेश देने के लिए ही रह गई हैं। अनेक स्वतंत्रता सेनानी आज़ादी के बाद देश की सत्ता हथियाने के लिए चुनावी लड़ाई में उतर गए।

2. (क) नारायण बाबू की पत्नी सौदामिनी नारायण बाबू से कह रही हैं।

(ख) नारायण बाबू का पुत्र सनातन की देह तवे-सी तप रही थी।

(ग) नारायण बाबू को घर से बाहर जाना था क्योंकि स्वतंत्रता सेनानी होने के कारण पुलिस उन्हें गिरफ्तार करना चाहती थी।

3. (क) नारायण दास उन स्वतंत्रता सेनानियों से अलग रहे जो आज़ादी के बाद देश की सत्ता हथियाने के लिए चुनावी लड़ाई में उतरे।

(ख) अलग रहकर नारायण बाबू बगीचे में पौधे उगाते, सूत कातते, अखबार और किताबें पढ़ते, इन्हीं में निमग्न होकर रह गए।

4. (क) अपने बेटे सनातन द्वारा श्रमिकों की हड़ताल खत्म करवाने की सिफारिश मंत्री से करने की बात पर नारायण बाबू गुस्से से लाल हो गए और सनातन को डाँटते हुए सवालों की झड़ी लगा दी। सनातन बाहर से चुपचाप दिख रहा था मगर भीतर क्रोध से थर्रा रहा था, वह बिना कोई उत्तर दिए चला गया। उसकी चाल से नारायण बाबू को अनुमान हो गया कि बेटे के साथ रहा-सहा संबंध भी इसी क्षण टूट गया।

(ख) नारायण दास अपने बेटे-बहू या संगी-साथी, किसी को न ठीक से समझ पाते और न ही अपनी बात उन्हें समझा पाते। उन्हें अपने-अपने मतलब में डूबे इन लोगों के बीच अकेलापन लगता है। इसी कारण अपने परिवार में नारायण बाबू बिलकुल निःसंग, अनावश्यक और फ़ालतू चीज़ की तरह उपेक्षित पड़े रहते।

(ग) बहू की बात सुनकर नारायण दास की छाती में हूक-सी इसलिए उठी क्योंकि बहू के स्वार्थ को देखकर उन्हें प्रतीत हुआ कि सरकारी भत्ते की तरह बहू का स्नेह भी उन्हें बहुत देर से मिला। इस स्नेह का उपभोग भी वे नहीं कर पाए।

5. (क) (ब) (✓) (ख) (अ) (✓)
(ग) (स) (✓) (घ) (स) (✓)

भाषा से

1. (क) अर्थ – समर्थ धर्मार्थ आर्थिक
(ख) आदर – आदरणीय आदरपूर्वक आदरार्थ
(ग) कर्म – कर्मठ कर्मवीर कर्मवती
(घ) ज्ञान – ज्ञानी ज्ञानवर्धक ज्ञानपूर्वक
(ङ) तंत्र – तंत्र-विद्या तांत्रिक तंत्र-मंत्र

2. (क) (2) (✓) (ख) (1) (✓)
(ग) (2) (✓) (घ) (1) (✓)
(ङ) (1) (✓) (च) (2) (✓)

3. (क) सज्जन लोग अच्छे होते हैं, वे मान जाते हैं।

(ख) आप सपरिवार हमारे घर आइए।

(ग) दूध स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।

(घ) राम सीता को देखकर प्रसन्न हुए।

(ङ) यदि वेतन मिलेगा तो मैं रुपए लौटा दूँगा।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

आज के राजनीतिक परिदृश्य को देखकर स्वतंत्रता सेनानी नारायण दास को यह देखकर ही बेहद तकलीफ होती है कि उन्हें ऐसे दिन भी देखने पड़ रहे हैं जब भोग ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन चुका है। त्याग की बातें औरों को उपदेश देने के लिए ही रह गई है। अनेक स्वतंत्रता सेनानी आजादी के बाद देश की सत्ता हथियाने के लिए चुनावी लड़ाई में उतरे, मगर नारायण दास उससे अलग ही रहे।

गहन सोच

- यदि देश आजाद नहीं हुआ होता तो आज हमारी बदतर हालत होती। आज हम लोग स्वतंत्र के स्थान पर परतंत्र की बेड़ियों में जकड़े हुए होते। अगर हमारा देश आजाद नहीं होती तो आज भी हम अंग्रेजों की गुलामी करते रहते और देश इतना आगे बढ़ ही नहीं पाता।

  (1) जातिवाद चलता रहता।

  (2) भारत की साक्षरता 20% के आस-पास होती।

  (3) आधी से ज्यादा जनता अत्यधिक गरीब होती।

  (4) भारत न्यूक्लीयर सुपर पावर नहीं होता।

(5) जी-20 और यू.एन. जैसी संस्थाओं में भारत का प्रभुत्व न दिखता।

- अपने ही देश में स्वतंत्रता की चाह रखने वालों सेनानियों को छिपकर इसलिए रहना पड़ता है, क्योंकि ब्रिटिश सरकार स्वतंत्रता सेनानियों को स्वतंत्रता के कार्य में बाधक थी। देखते ही उन्हें पकड़कर जेल के सीखचों के पीछे डाल दिया जाता था तथा उन्हें जेल में तरह-तरह की यातनाएँ दी जाती थी।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'कलम आज उनकी जय बोल' इंटरनेट पर पुस्तकालय की सहायता से पढ़कर स्वतंत्रता-सेनानियों के त्याग और बलिदान के बारे में जाने।

3. कल्पना आधारित गतिविधि

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।

4. रचनात्मक गतिविधि

छात्र/छात्राएँ स्वयं को नारायण दास मानकर जेल से अपने पुत्र को पत्र लिखें।

5. भारत का ज्ञान

छात्र/छात्राएँ संबंधित जानकारी इकट्ठा करके परियोजना रिपोर्ट बनाएँ।

15. एवरेस्ट की चुनौती

पाठ से

मौखिक

1. (क) संसार का सबसे ऊँचा पर्वत-शिखर माउंट एवरेस्ट है। नेपाली इसे 'सगरमाथा' के नाम से पुकारते हैं।

   (ख) एवरेस्ट के शिखर को छूने में सबसे पहले 1953 में शेरपा तेनजिंग और न्यूजीलैंड के एडमंड हिलेरी को सफलता मिली।

(ग) 27 मई 1965 को सुबह सात बजे लेखक आखिरी शिविर के लिए चले। उस समय उनके साथ फू दोरजी, रावत, बहुगुणा और सात शेरपा थे।

(घ) सिलेंडर से ऑक्सीजन इसलिए निकल रही थी क्योंकि सिलेंडर से मुँह तक ऑक्सीजन ले जानेवाली नली में छेद हो गया था। टेप और फ़िल्म की सहायता से इस रिसाव को ठीक किया गया।

(ङ) लेखक को 'हिलेरी की चिमनी' को लेकर यह चिंता थी कि शिखर के मार्ग में यही सबसे बड़ी बाधा थी।

(च) एवरेस्ट के शिखर के बिलकुल पास होने पर लेखक को साँस लेना पहले से अधिक मुश्किल हो गया था। उनके मन और शरीर ने भी ज़वाब दे दिया था। उसके भीतर से आवाज़ उठ रही थी कि हमें आगे बढ़कर चढ़ाई पूरी करनी ही है।

लिखित

(क) "एवरेस्ट संसार का सर्वोच्च शिखर है।" इसकी जानकारी 1849 में एक सर्वेक्षण दल को पहली बार पता चला। उस समय इसे 'शिखर-15' नाम दिया गया। बाद में इसे एवरेस्ट कहा जाने लगा।

(ख) कैंप-4 पर पहुँचकर लेखक सारी रात जागता रहा क्योंकि वह जानता था कि सोते समय अगर मैंने करवट ली तो तंबू लुढ़ककर तीन हज़ार फुट नीचे जा गिरेगा। स्थानाभाव के कारण सभी तंबू एक पाँत में लगाए गए थे।

(ग) अंतिम शिविर 8,512 मीटर की ऊँचाई पर था। इस शिविर से आगे साढ़े चार सौ मीटर लंबी एक पहाड़ी थी। यह पहाड़ी बहुत सँकरी और तीखी है और इसके दोनों ओर गहरे ढाल हैं।

(घ) 'हिलेरी की चिमनी' को पार करने के लिए चट्टान में बर्फ़ की कुल्हाड़ी की मदद से छेद करने की कोशिश की गई और उसके सहारे ऊपर चढ़ा गया। हम जमी हुई बर्फ़ में अपने जूतों की कीलें गाड़ देते और कुल्हाड़ी की मदद से शरीर का वज़न संतुलित करते हुए अचानक कुल्हाड़ी को घुमाकर ऊपर दीवार में गाड़ देते और इस तरह ऊपर चढ़ जाते।

(ङ) चिमनी पार करके लेखक और उसके साथी यह सोचकर खुश हो रहे थे कि अब हम शिखर के बिलकुल पास आ गए हैं, लेकिन पहाड़ी का यह टुकड़ा खत्म होने में ही नहीं आ रहा था और हमारा संघर्ष अधिक कठिन होता जा रहा था। साँस लेना पहले से भी अधिक मुश्किल हो गया था।

2. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✓) (ङ) (✓)

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (स) (✓) (ख) (अ) (✓)
(ग) (ब) (✓) (घ) (द) (✓)
(ङ) (अ) (✓)

भाषा से

1.

दल	–	समूह	झुंड	समुदाय
रात	–	रात्रि	निशा	यामिनी
पहाड़	–	पर्वत	गिरी	अचल
आदमी	–	मानव	नर	मनुज
धरती	–	भू	भूमि	धरा

2.

ईय	–	राष्ट्रीय	अनुकरणीय
इत	–	चिंतित	शोभित

3.

परयास	–	प्रयास	सिखर	–	शिखर
उपर	–	ऊपर	जियादा	–	ज़्यादा
मेहराव	–	मेहराब	संकरी	–	सँकरी

संधि विच्छेद

सूक्ति	–	सु	+	उक्ति
विद्यालय	–	विद्या	+	आलय
धर्मेंद्र	–	धर्म	+	इंद्र
परमेश्वर	–	परम	+	ईश्वर

शिवालय	–	शिव	+	आलय
महात्मा	–	महा	+	आत्मा

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

एवरेस्ट संसार का सबसे ऊँचा पर्वत-शिखर है। यह समुद्र से 8,848 मीटर (लगभग नौ किलोमीटर) ऊँचा है। इसके उत्तर में तिब्बत तथा दक्षिण में नेपाल है। तिब्बती इसे 'चोमोलुंगमा' अर्थात् 'संसार की माता' और 'नेपाली सगर माथा' के नाम से पुकारते हैं।

1849 में एक सर्वेक्षण दल को पहली बार यह पता चला कि यह संसार का सर्वोच्च पर्वत-शिखर है। उस समय इसे 'शिखर-15' के नाम दिया गया बाद में इसे 'एवरेस्ट' कहा जाने लगा।

गहन सोच

लेखक की साँस लेने में दिक्कत इसलिए हो रही थी क्योंकि उनके सिलेंडर की ऑक्सीजन कहीं से निकल रही थी पता चला कि सिलेंडर के मुँह तक ऑक्सीजन ले जाने वाली में छेद हो गया है। यह छेद बूटो की कील से हुआ था। आस-पास कहीं बैठने की जगह नहीं थी, इसलिए फू दारजी ने बर्फ काटकर एक छोटा-सा प्लेटफार्म बनाया। यहाँ बैठकर टेप और थोड़ी-सी फिल्म की सहायता से यह छेद बंद किया।

2. बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) (ब) (✓) (ख) (अ) (✓)

3. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ 'माउंट एवरेस्ट' के बारे में इंटरनेट से जानकारी प्राप्त करके कुछ पंक्तियाँ लिखें।

4. भारत का ज्ञान

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से हिमालय की सबसे ऊँची चोटियों का नाम उनकी ऊँचाई के साथ लिखें।

16. विज्ञापन युग

पाठ से

मौखिक

1. (क) लेखक के ऊपर उनके पड़ोसियों की ऐसी कृपा है कि रात को सोने तक और सुबह उठने के साथ ही उन्हें गज़लें, भजन और गीत; और उनके साथ-साथ, चाय, तेल और सिरदर्द की टिकियों के विज्ञापन सुनने पड़ते हैं।

   (ख) बर्नार्ड शॉ के नाटक हमें यह बताने के लिए छापे जाते हैं कि ब्रिटेन के किस प्रेस की छपाई अच्छी है।

   (ग) हर चीज़, हर जगह अपने अलावा किसी भी चीज़ और किसी भी जगह का विज्ञापन हो सकती है।

   (घ) कला केंद्र कुछ स्वनाम-धन्य लोगों की दानवीरता का विज्ञापन हैं। शिक्षण केंद्र सांप्रदायिक संस्थाओं का विज्ञापन हैं।

   (ङ) बच्चे को हँसते देख लेखक को लाल डिब्बे में बंद बेबी मिल्क की याद आती है।

लिखित

   (क) देश के कोने-कोने में बने प्राचीन मंदिर और ऐतिहासिक खंडहर इसलिए हैं कि लोगों में यातायात के प्रति रुचि जगाने में सहायक होते हैं, पर्यटन व्यवसाय को प्रोत्साहन मिलती है। मीनाक्षी मंदिर और रामेश्वरम के शिखर और खजुराहो के कक्ष इस दृष्टि से भी उपयोगी हैं कि वे एक विशेष ब्रांड की सीमेंट की मजबूती को व्यक्त करने के प्रतीक बन सकें।

   (ख) लेखक के अनुसार बहुत-सी चीज़ें एक-दूसरों का विज्ञापन हैं। फूल इत्र की शीशी का विज्ञापन है, इत्र की शीशी फूलों का

विज्ञापन है। पत्र लेखक का विज्ञापन है तो लेखक पत्र का विज्ञापन है। सौंदर्य शृंगार प्रसाधनों का विज्ञापन है, और शृंगार प्रसाधन सौंदर्य के विज्ञापन हैं। बहुत-सी चीज़ें स्वयं अपना विज्ञापन हैं, जैसे–उपदेश, आलोचना, नेतागिरी इत्यादि। मतलब यह कि जहाँ जाएँ, जिधर जाएँ, जहाँ रहें इन विज्ञापनों की लपेट से बच नहीं सकते।

(ग) विज्ञापन कला जिस तेज़ी से उन्नति कर रही है, उससे लगता है कि ऐसा युग आनेवाला है जब शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और साहित्य, इनका उपयोग केवल विज्ञापन कला भर के लिए रह जाएगा। आज की स्थिति यह है कि हर जगह विज्ञापन-ही-विज्ञापन दिखाई देता है।

(घ) शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और साहित्य विज्ञापन की विविध विधाएँ हैं।

(ङ) विज्ञापन-कला जिस तेज़ी से उन्नति कर रही है, उससे भविष्य के लिए और भी अंदेशा है। लगता है ऐसा युग आनेवाला है जब शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और साहित्य, इनका उपयोग केवल विज्ञापन-कलाभर के लिए ही रह जाएगा।

2. छात्र स्वयं करें।

3. (क) प्रस्तुत पंक्ति के द्वारा यह स्पष्ट हो रहा है कि उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक कोई कोना ऐसा नहीं बचा है जिसका किसी-न-किसी चीज़ के विज्ञापन के लिए उपयोग किया जा रहा हो। मतलब यह है कि हम विज्ञापनों की लपेट से बच नहीं सकते।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि विज्ञापन-कला तेज़ी से उन्नति कर रही है। आज कोई भी क्षेत्र, स्थान, वस्तु इत्यादि विज्ञापन से अछूता नहीं है। बहुत-सी चीज़ें एक-दूसरे का विज्ञापन हैं। बहुत-सी चीज़ें स्वयं अपना विज्ञापन हैं, जैसे–उपदेश, आलोचना, नेतागिरी इत्यादि।

4. (क) (अ) (✓) (ख) (द) (✓)
(ग) (ख) (✓)

भाषा से

1. (क) (ब) (✓) (ख) (ब) (✓)
(ग) (द) (✓) (घ) (द) (✓)

2. (क) नवयुवती – नई है जो युवती कर्मधारय समास
(ख) चित्रकला – चित्र की कला तत्पुरुष समास
(ग) चौराहा – चार राहों का समूह द्विगु समास
(घ) नीलगिरि – नीला है जो गिरि कर्मधारय समास
(ङ) राजदूत – राजा का दूत तत्पुरुष समास
(च) प्रमाण-पत्र – प्रमाण और पत्र द्वंद्व समास

3. (क) प्रमाण – (सबूत) हिंसा में शामिल लोगों के खिलाफ़ प्रमाण मिले हैं।
प्रणाम – (नमस्कार) मैं अपने माता-पिता को प्रतिदिन प्रणाम करता हूँ।
(ख) दिशा – (तरफ़) बच्चों की गेंद पूरब दिशा में गई है।
दशा – (हालत) माता जी बीमार चल रही हैं, उनकी दशा ठीक नहीं है।
(ग) आकृति – (आकार) इस बार फलों की आकृति बड़ी है।
आकृत –
(घ) उपेक्षा – (अनादर) मित्रों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
अपेक्षा – (उम्मीद) शिक्षक से अपेक्षा है कि वे पाठ ज़रूर पढ़ाऐंगे।

4. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

लेखक ऐसा इसलिए कहते है कि उनके लिए अब कोई गजल, गजल नहीं और कोई गीत, गीत वहीं रहा। क्योंकि उनके पड़ोसियों की ऐसी कृपा है कि रात को सोने से लेकर सुबह तक और सुबह उठने के साथ ही गजलें, भेजन और गीत और उनके साथ-साथ चाय, तेल और सिरदर्द की टिकियों के विज्ञापन सुनने पड़ते हैं।

गहन सोच

हमारी दिनचर्या में विज्ञापन का बहुत महत्व है। मानव की खरीदारी विज्ञापन से ही प्रभावित होती है वर्तमान युग में वैज्ञानिक प्रगति ने तो विज्ञापन में और भी चार-चाँद लगा दिए है। संसार का कोई भी कोना ऐसा न होगा। जहाँ विज्ञापन ने पाँव न पसारे हो। विज्ञापन के इस विस्तार के साथ-साथ संसार की कोई भी ऐसी वस्तु नहीं बची जिसका विज्ञापन न होता है। विज्ञापन के चकाचौंध से प्रभावित होकर ही हम वस्तुओं या अपनी आवश्यकताओं की खरीदारी करते है।

2. विषय एकीकरण

छात्र/छात्राएँ विज्ञापन 'वरदान या अभिशाप' विषय पर कक्षा में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करें।

3. कला समेकन

छात्र/छात्राएँ कलम के लिए एक विज्ञापन स्वयं तैयार करें।

17. सत्य और अहिंसा

पाठ से

मौखिक

1. (क) मोहनदास करमचंद गाँधी

   (ख) गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को हुआ था।

(ग) गाँधी जी का जन्म गुजरात के पोरबंदर जिले में हुआ था।

(घ) सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह—गाँधी जी के तीन प्रमुख सिद्धांत हैं।

लिखित

(क) गाँधी जी की नज़र में वाणी में और आचार-विचार में सत्य का होना ही सत्य है।

(ख) पल-पल साधना से ही सत्य की प्राप्ति हो सकती है। लेकिन सत्य का संपूर्ण दर्शन कठिन है। उसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है।

(ग) गाँधी जी के अनुसार सत्य और अहिंसा का मार्ग जितना सीधा है उतना ही तंग भी, खाँडे की धार पर चलने के समान है। नट जिस डोर पर सावधानी से नज़र रखकर चल सकता है, सत्य और अहिंसा की डोर उससे भी पतली है। ज़रा-सा चूके कि नीचे गिरे। पल-पल साधना से ही उसके दर्शन होते हैं।

(घ) गाँधी जी के अनुसार अहिंसा वह स्थूल वस्तु नहीं है जो आज हमारी दृष्टि के सामने है। किसी को न मारना, इतना तो है ही। कुविचार मात्र हिंसा है, उतावली हिंसा है। मिथ्या भाषण हिंसा है। द्वेष हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। जगत के लिए जो आवश्यक वस्तु है, उस पर कब्ज़ा रखना भी हिंसा है।

(ङ) अहिंसा बिना सत्य की खोज असंभव है। अहिंसा और सत्य ऐसे ओत-प्रोत हैं जैसे सिक्के के दोनों रूख या चिकनी चकती के दो पहलू। अहिंसा परम धर्म है और सत्य परमेश्वर।

2. (क) सत्य के बिना किसी भी <u>नियम</u> का शुद्ध पालन असंभव है।

(ख) यह सत्य रूपी <u>परमेश्वर</u> मेरे लिए रत्न चिंतामणि सिद्ध हुआ है।

(ग) अतः हमारा दूसरा विशेष <u>धर्म</u> सामने आया।

(घ) <u>अहिंसा</u> वह स्थूल वस्तु नहीं है जो आज हमारी दृष्टि के सामने है।

(ङ) साधन की चिंता करते रहने पर <u>साध्य</u> के दर्शन किसी दिन कर ही लेंगे।

3. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓)
(घ) (✓) (ङ) (✗)

4. छात्र स्वयं करें।

5. (क) (द) (✓) (ख) (स) (✓)
(ग) (अ) (✓) (घ) (द) (✓)

भाषा से

1.

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
संबंध	सम्	संबंध
अभिमान	अभि	अभिमान
अंतर्गत	अंतर	अंतर्गत
अनुकरण	अनु	अनुकरण
अनजान	अन	अनजान
हमदर्द	हम	हमदर्द

2.

सत्य	–	झूठ	गुण	–	अवगुण
अहिंसा	–	हिंसा	सुखदायी	–	दुखदायी
शाश्वत	–	क्षणिक	कायरता	–	हिम्मत
शांति	–	अशांति	स्वार्थ	–	परमार्थ

3. सरल वाक्य – लड़की सुंदर है।
मिश्र वाक्य – सभी जानते हैं कि तुम अच्छे विद्यार्थी हो।
संयुक्त वाक्य – बादल घिरे और मयूर नाचने लगे।
विधानार्थक वाक्य – वह प्रतिदिन व्यायाम करता है।
निषेधात्मक वाक्य – मेधावी छात्र परीक्षा में नकल नहीं करते।
प्रश्नवाचक वाक्य – तुम्हारा नाम क्या है?
आज्ञार्थक वाक्य – क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?
इच्छार्थ वाक्य – भगवान आपको सदा स्वस्थ रखे।

6. अ + रुचि – अरुचि मुझे मीठा खाने से अरुचि हो गई है।

अ + सहनीय – असहनीय मेरे पीठ में असहनीय पीड़ा हो रही है।

अ + सत्य – असत्य असत्य नहीं बोलना चाहिए।

अ + सावधान – असावधान घर में सभी असावधान थे इसलिए चोरी हो गई।

अ + ज्ञान – अज्ञान अज्ञान अंधकार के समान है।

अ + हिंसा – अहिंसा गाँधी जी अहिंसा के पुजारी थे।

7. **बायें से दायें**

1. सप्रिय 3. अनिवार्य

4. पुरस्कार

ऊपर से नीचे

1. सत्यवादी 2. कायर

3. अहंकार 5. आचरण

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

गांधी जी के अनुसार सत्य का अर्थ सिर्फ सच बोलना ही इसलिए है क्योंकि साधारणत: सत्य का अर्थ सच बोलना मात्र ही समझा जाता है। वाणी में और आचार-विचार में सत्य का होना ही सत्य है। इस सत्य को पूर्णतया समझने के लिए जगत में और कुछ भी जानना बाकी नहीं रहता। उसमें जो न समाए वह सत्य नहीं है, ज्ञान नहीं है।

गहन सोच

सत्य और अहिंसा का मार्ग जितना सीधा है उतना ही तंग भी, खांडे

की धार पर चलने के समान है। नट जिस जोर पर सावधानी से नजर रखकर चल सकता है, सत्य और अहिंसा की डोर उससे भी पतली है। ज़रा-सा चूके कि नीचे गिरे। पल-पल साधना से ही उसके दर्शन होते है। सत्य और अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करने वाला हर व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण– महात्मा गांधी जी है जिन्होंने सत्य और अहिंसा का अपनाया और इसमें वे सफल भी रहे।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से जानकारी प्राप्त कर महात्मा गांधी जी के विषय में जानकारी लिखिए।

3. जीवन कौशल एवं मूल्य

छात्र/छात्राएँ लिखे कि पाठ को पढ़कर उनको महात्मा गांधी के जीवन से क्या-क्या सीख मिली।

4. रचनात्मक गतिविधि

छात्र/छात्राएँ गांधी जी के जीवन से जुड़े चित्रों का संकलन कर एक कोलॉज तैयार करें।

18. नीड़ का निर्माण फिर-फिर

पाठ से

मौखिक

1. (क) आँधी आने से धरती और आकाश में अँधेरा छा गया।

   (ख) उषा की मोहिनी मुस्कान कहकर कवि सूर्योदय का संकेत करते हैं।

   (ग) आशा के विहंगम से कवि ने पूछा कि रात में तुम कहाँ छिपे थे।

   (घ) प्रस्तुत कविता में कवि ने चिड़ियों की कर्तव्य-परायणता को उजागर किया है कि वह कैसे प्रतिकूल परिस्थितियों का आसानी से सामना करती है।

लिखित

2. (क) बह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा
धूलि-धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा।

(ख) एक चिड़िया चोंच में
तिनका लिए जो जा रही है,
वह सहज में ही पवन
उनचास को नीचा दिखाती।

3. (क) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि रात इतनी अँधेरी आयी थी कि ऐसा लगा जैसे कभी सवेरा होगा ही नहीं। इस भयानक रात्रि से सारा संसार भयभीत हो गया। अर्थात् जीवन में इतने बड़े-बड़े दुख तथा संकट आए कि मनुष्य उनसे भयभीत हो गया और उसे लगा कि ये दुख तथा संकटों के बादल कभी दूर नहीं होंगे। लेकिन रात कितनी भी अँधेरी हो, सुबह होते ही सूर्य की किरणें उस अंधकार को दूर कर देती हैं। इसी प्रकार मुसीबतों तथा दुखों के बादल कितने भी बड़े हों, एक समय बाद भाग्य मुनष्य को ऐसा अवसर ज़रूर देता है कि वह पुरुषार्थ कष्ट करके उन दुखों के पहाड़ों को हटा सके।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि आँधी तथा तूफ़ान अनगिनत बार पक्षियों के घोंसलों को नष्ट कर देते हैं, किन्तु वे पक्षी कभी हार नहीं मानते। बार-बार अपना घोंसला बनाते रहते हैं। आशा का विहंगम मनुष्य को इसी बात की प्रेरणा दे रहा है कि संकट कितना भी बड़ा हो, विनाश कितना भी भयंकर हो, निर्माण की प्रक्रिया उसके बाद दुबारा शुरू की जा सकती है। मनुष्य को किसी भी हालत में आशावान बने रहना चाहिए।

(ग) प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि नाश का दुख कितना भी बड़ा हो, वह हमेशा के लिए नहीं टिक सकता। उसका अंत होना ही है। निर्माण की प्रक्रिया दुबारा शुरू होना निश्चित है। कवि ने इस बात को स्पष्ट करने के लिए उषा तथा चिड़िया का उदाहरण दिया है। रात चाहे कितनी भी अँधेरी हो, उषा की किरणें उस अँधेरे को छिन्न-भिन्न कर देती हैं। पवन कितने भी वेग से बहे, चिड़िया उसके विपरीत दिशा में उड़ान भरती ही है। विनाश कितना भी भयंकर हो, उसके बाद सृष्टि में नवनिर्माण शुरू होता ही है।

(घ) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि मनुष्य को लगातार पुरुषार्थ करने व भविष्य के प्रति आशावान बने रहने के लिए कह रहे हैं। पक्षी जब अपने लिए घोंसला बनाने का प्रयत्न करते हैं तो कई बार विभिन्न कारणों से वो घोंसले नष्ट हो जाते हैं। इसके बावजूद वे पक्षी प्रयत्न करना नहीं छोड़ते, बार-बार कोशिश करके घोंसला बना ही लेते हैं। नीड़ को प्रतीक के रूप में प्रयोग करके कवि यह कह रहे हैं कि मनुष्य जब कोई चीज़ करने या पाने का प्रयास करता है तो बीच में कई रुकावटें आती हैं। मनुष्य को उन रुकावटों से डरकर या परेशान होकर अपने लक्ष्य को छोड़ना नहीं चाहिए, बल्कि बार-बार प्रयत्न करते रहना चाहिए। इससे बार-बार स्नेह का आभास भी होता है।

4. (क) क्रुद्ध नभ के वज्र दंतों
से उषा है मुस्कराती,

(ख) नाश के दुःख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख

(ग) प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नवगाण फिर-फिर

भाषा से

1. (क) नेह का निर्माण फिर-फिर

(ख) धूलि-धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा।
(ग) किंतु प्राची से उषा की
मोहिनी मुस्कान फिर-फिर।

2. (क) निर्माण – निर्मित (ख) गर्व – गर्वित
(ग) क्रोध – क्रोधित (घ) भ्रम – भ्रमित
(ङ) उदय – उदित (च) सीमा – सीमित
(छ) पाठ – पठित (ज) बाधा – बाधित

रचनात्मक मूल्यांकन

गंगा सरयू चेनाब ब्रह्मपुत्र
सतलुज कावेरी यमुना मंदाकिनी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

उषा की मोहिनी मुसकान से तात्पर्य है कि, सवेरा होने पर अँधेरा दूर हो जाता है, सुबह सबका मन मोह लेती है, सवेरा होने पर सभी काम में लग जाते हैं। तथा दुख के बाद सुख का आगमन होता है।

गहन सोच

प्रस्तुत कविता से चिड़िया के कर्तव्य परायणता का संदेश मिलता है कि वह कैसे प्रतिकूल परिस्थितियों का आसानी से सामना करती है।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से जानकारी प्राप्त करें बताएँ कि हरिवंश राय 'बच्चन' अभिनेता अमिताभ बच्चन के पिता थे।

3. मौखिक कौशल

छात्र/छात्राएँ इस कविता का सस्वर गान करके हिंदी अध्यापक/अध्यापिका को सुनाएँ।

19. शनि : सबसे सुंदर ग्रह

पाठ से

मौखिक

1. (क) शनि सौरमंडल का दूसरा बड़ा ग्रह है। यह हमारी पृथ्वी से करीब 750 गुना बड़ा है।

(ख) सनीचर का नाम लेते ही अंधविश्वासियों की रूहें काँपने लगती हैं क्योंकि ज्योतिषियों की पोथियों में इस ग्रह को इतना अशुभ माना गया है कि जिस राशि में इसका निवास होता है, उसके आगे और पीछे की राशियों को भी यह छेड़ता है। एक बार यदि यह ग्रह किसी की राशि में पहुँच जाए तो फिर साढ़े सात साल तक उसकी खैर नहीं।

(ग) हमारी पौराणिक कथाओं के अनुसार शनि महाराज सूर्य के पुत्र हैं। भैंसा इनका वाहन है। पाश्चात्य ज्योतिष में शनि को 'सैटर्न' कहते हैं।

(घ) शनि के बारे में सबसे प्रामाणिक जानकारी अंतरिक्ष यानों का युग शुरू होने के बाद पिछले करीब दो दशकों में मिली है।

(ङ) शनि अपनी धुरी पर पृथ्वी की अपेक्षा अधिक तेज़ी से घूमता है। इसलिए शनि का दिन हमारे दिन से काफी छोटा होता है।

(च) ग्रहों की परिक्रमा करने वाले पिंडों को उपग्रह कहते हैं। अब तक शनि के सत्रह उपग्रह बताए जाते हैं।

लिखित

(क) शनैःचर का अर्थ होता है—धीमी गति से चलने वाला। आकाश के गोलक पर यह ग्रह बहुत धीमी गति से चलता दिखाई देता है, इसीलिए प्राचीन काल के लोगों ने इसे शनैःचर नाम दिया था।

(ख) शनि को यदि दूरबीन से देखा जाए तो इस ग्रह के चहुँओर वलय या कंकण दिखाई देते हैं। प्रकृति ने इस ग्रह के गले में खूबसूरत 'हार' डाल दिया है। शनि के इन वलयों या कंकणों ने इस ग्रह को सौरमंडल का सबसे सुंदर एवं मनोहर पिंड बना दिया है।

(ग) शनि ग्रह का भार केवल 95 पृथ्वियों के बराबर है। कारण यह यह है कि शनि की द्रव्यराशि का औसत घनत्व बहुत कम है–पानी से भी कम। अतः शनि ग्रह को पानी के किसी बहुत बड़े महासागर में डालना संभव हो तो यह उसमें डूबेगा नहीं, बल्कि तैरने लग जाएगा।

(घ) शनि का सबसे बड़ा चंद्र टाइटन सौरमंडल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और दिलचस्प उपग्रह है। टाइटन हमारे चंद्र से भी काफी बड़ा है। इसका व्यास 5,150 किलोमीटर है। टाइटन की सबसे अद्‌भुत चीज़ है–इस पर मौजूद घना वायुमंडल।

(ङ) शनि ग्रह के चारों ओर वलय बना हुआ है। सबसे पहले गैलीलियो ने ही इनकी खोज की थी। अभी कुछ साल पहले तक शनि के तीन स्पष्ट वलय पहचाने गए थे। इनके बीच में कुछ खाली जगह भी है। शनि के ये वलय इस ग्रह के विषुवतीय समतल में ही परिक्रमा करते हैं। शनि के वलय ज़्यादा विस्तृत और स्पष्ट हैं। ये शनि की सतह से करीब 50 हजार किलोमीटर की ऊँचाई पर शुरू होते हैं और दो लाख किलोमीटर से भी अधिक दूरी तक फैले हुए हैं। खगोलविदों का मत है कि इनकी मोटाई 10 किलोमीटर से अधिक नहीं हो सकती।

(च) शनि के वलय ठोस नहीं हो सकते। ये छोटे-छोटे टुकड़ों से बने हैं। ये टुकड़े बर्फ से आच्छादित हैं, इसलिए शनि के ये वलय खूब चमकते हैं। शनि के इन वलयों की उत्पत्ति के बारे में कई सिद्‌धांत प्रस्तुत किए गए हैं। कुछ खगोलविदों का कहना है कि शनि के समीप एक उपग्रह था। शनि के अत्यधिक गुरुत्वाकर्षण बल के कारण वह उपग्रह विखंडित हो गया और उसी के टुकड़ों से ये वलय बने हैं। दूसरा सिद्‌धांत यह है कि शनि की उत्पत्ति के समय से ही ये वलय मौजूद हैं। ऐसे ही वलयों से बाद में उपग्रह बनते हैं।

2. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓)
(घ) (✓) (ङ) (✗)

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (घ) (✓) (ख) (अ) (✓)

(ग) (ब) (✓) (घ) (ब) (✓)

(ङ) (स) (✓)

भाषा से

1.

काल्पनिक	–	कल्पनातीत	अशुभ	–	शुभ
परिवर्तन	–	स्थिर	प्राचीन	–	नवीन
स्वतंत्र	–	परतंत्र	नज़दीक	–	दूर
निर्माण	–	विध्वंस	स्पष्ट	–	धुंधला
उत्पत्ति	–	विनाश			

2.

शब्द		**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
आच्छादित	–	आच्छादन	इत
विखंडित	–	विखंड	इत
काल्पनिक	–	कल्पना	इक
भारतीय	–	भारत	इय
विस्तृत	–	विस्तार	इत

3. अशुभ अंधविश्वासियों सर्वाधिक स्वचालित

4. (क) सर्वनाम (ख) सार्वनामिक विशेषण

(ग) सार्वनामिक विशेषण (घ) सर्वनाम

(ङ) सार्वनामिक विशेषण (च) सर्वनाम

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

शनि को 'शनैश्चर' भी कहते हैं। आकाश के गोलक पर यह ग्रह बहुत धीमी गति से चलता दिखाई देता है। इसलिए प्राचीन काल के लोगों ने इसे– 'शनैः चर' नाम दिया था। 'शनैः चर' का अर्थ होता है– 'धीमी गति से चलने वाला।'

गहन सोच

पाठ में शनि को सौरमंडल का सबसे सुंदर ग्रह बताया गया है, क्योंकि शनि को यदि दूरबीन से देखा जाए तो इस ग्रह के चारों ओर वलय या कंकड़ दिखाई देते हैं। प्रकृति ने इस ग्रह के गले में खूबसूरत 'हार' डाल दिया है। शनि के इन वलयोपा कंकणों ने इस ग्रह को सौरमंडल का सबसे सुंदर एवं मनोहर पिंड बना दिया है।

2. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।

3. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ सौरमंडल के बारे में इंटरनेट से जानकारी प्राप्त कर एक रिपोर्ट तैयार करें।

4. कला समेकन

छात्र/छात्राएँ एक काले रंग के चार्ट पेपर पर सफेद कागज़ की सहायता से सौरमंडल का चित्र बनाएँ।

20. हँसी के मुखौटे

पाठ से

मौखिक

1. (क) लेखक और शर्मा जी बंगलौर में मिले थे।

(ख) शर्मा जी ने लेखक से बिमारी और बेटी के विवाह की घटनाओं का ज़िक्र किया।

(ग) शर्मा जी की बात सुनकर लेखक ने मन में सोचा, हमारी ज़िंदगी जो है, सो है। कम-से-कम बच्चों की ज़िंदगी तो बने और बन भी गई थी।

(घ) अपनी गहरी व्यथा को छिपाने के लिए शर्मा जी ने बनावटी हँसी हँसने का सोचा।

(ङ) शर्मा जी की दृष्टि में बड़े लोग हैं—दूधवाला और किराने वाला।

(च) शर्मा जी के पुत्र का पत्र पाकर लेखक स्तब्ध थे।

(छ) इस पाठ का शीर्षक 'हँसी के मुखौटे' बिलकुल सार्थक है। इस पाठ का अन्य शीर्षक 'मुस्कराते चेहरे' हो सकता है।

लिखित

(क) प्रस्तुत पंक्ति से लेखक यह स्पष्ट करना चाह रहे हैं कि उन्हें लिखने का बहुत शौक था लेकिन वर्तमान में उनके जीवन में अनेक घटनाएँ घटी हैं जिससे अब वे खुद ही किस्सा हो गए हैं।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति में शर्मा जी की व्यंग्य वेदना छिपी हुई है।

(ग) शर्मा जी जब नौकरी करने बंगलौर आ गए, लड़की की शादी से पहले दहेज की चर्चा करते समय लेखक को लगा कि वे उनसे पैसा माँगेंगे।

(घ) पाठ में बिमारी का प्रसंग, किशोरी के विधवा होने तथा कन्या के विवाह जैसे प्रसंगों से यह पता चलता है कि शर्मा जी की हँसी के पीछे गहरी व्यथा छिपी थी।

(ङ) इस कहानी में लेखक ने बताया है कि किस प्रकार कुछ धैर्यवान लोग भीषण मुसीबतों में भी हँसते-मुस्कराते रहते हैं। उनके दिल में चाहे कितना भी दर्द हो, मुख पर हँसी दिखाई देती है। मानो उन्होंने अपने दुख-भरे जीवन का बनावटी चेहरा पहन रखा हो।

2. छात्र स्वयं करें।

3. (क) (स) (✓) (ख) (स) (✓)

4. छात्र स्वयं करें।

भाषा से

1. छात्र स्वयं करें।

2.

आजीवन	जीवनभर	अव्ययीभाव समास
बेझिझक	झिझक के बिना	अव्ययीभाव समास
ईमानदारी	ईमान के साथ	तत्पुरुष समास
असुविधा	सुविधा के बिना	अव्ययीभाव समास
खातिरदारी	खातिर के साथ	तत्पुरुष समास

3. सब्जीवाला फलवाला फूलवाला दूधवाला अखबारवाला

4. (क) कभी हम किस्से लिखते थे, लेकिन अब खुद किस्सा हो गए हैं।
   (ख) वे फिर ज़ोर से हँसे–पागलों–जैसी हँसी।
   (ग) वह परीक्षा में बैठा और पास हुआ।
   (घ) दिन–रात घर में पिसें और बाहर अलग।
   (ङ) कितनी ही अर्जियाँ लिखीं लेकिन किसी ने कुछ भी न दिया।

5. (क) यहीं बंगलौर में नौकरी भी मिली।
   (ख) दहेज़ के बिना कोई नहीं मिलता।
   (ग) अपने काम के लिए मुझे एक से मिल के जाना है।
   (घ) आपको कष्ट तो हुआ।
   (ङ) शर्मा जी ने बिल चुकाया।

6. (क) प्रश्नवाचक (ख) निषेधात्मक
   (ग) स्वीकृतिवाचक (घ) निषेधात्मक
   (ङ) प्रश्नवाचक

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

लेखक को शर्मा जी से मिलते वक्त किस बात का डर सता रहा था कि कहीं शर्मा जी पैसा माँगने के लिए भूमिका बना रहे हों, सहानुभूति के नीचे कही स्वार्थ की परत भी आ जाती है।

गहन सोच

छात्र/छात्राएँ पाठ पढ़कर स्वयं उत्तर दें।

2. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ इस विषय में अपना-अपना अनुभव विस्तार से बताएँ।

3. कला समेकन

मित्रों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है। मित्र हमारे जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से होते हैं जो हमें खुशियों और दुखों के समय साथ देते है। मित्रता न केवल मनोरंजन प्रदान करती है, बल्कि हमें समझने, सहायता करने और प्रेरणा देने में भी मदद करती है। अच्छे मित्र हमारे विचारों को निर्माण करने में मदद करते हैं और हमें सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

छात्र/छात्राएँ स्वयं अपने मित्र का रेखा चित्रांकन करें।

21. राष्ट्र की मर्यादा

पाठ से

मौखिक

1. (क) पोरस झेलम का शासक था।

   (ख) सिकंदर यूनान का महान विजेता था।

   (ग) पोरस झेलम का राजा था।

लिखित

(क) सिकंदर यूनान से भारत पर विजय प्राप्त करने आया था।

(ख) भारत की संस्कृति महान है। भारतीय संस्कृति की दो विशेषताएँ–

(1) भारत के राजाओं ने अन्य देशों की तरह दूसरे राष्ट्रों पर कभी अधिकार प्राप्त करने के लिए उन पर आक्रमण अथवा अत्याचार नहीं किए।

(2) भारतीय राजाओं ने आक्रमणकारी राजाओं को विश्व-बंधुत्व की शिक्षा दी। उन्हें नैतिकता और सभी जीवों के कल्याण की प्रेरणा दी।

(ग) महाराजा पोरस भारत के एक महान शासक थे। वे निर्भय और वीर शासक थे। राष्ट्र हित में उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। अपनी प्रजा का वे पूरा ध्यान रखते थे।

(घ) महाराज पोरस ने राजदूत के लिए सोने और हीरे की रोटी इसलिए बनवाई ताकि इससे उसकी भूख शांत हो सके, क्योंकि सोने और मणियों की भूख ही यूनानियों (सिकंदर) को मकदूनिया से यहाँ तक खींच लाई है।

(ङ) महाराज पोरस ने सिकंदर को बंदी न बनाकर उचित कार्य किया। महाराज पोरस एक महान वीर शासक थे और उन्हें एक विदेशी शासक को बंदी बनाना शोभा नहीं देता।

2. उपहास – हँसी, खिल्ली उड़ाना

आचरण – व्यवहार

विचार-विमर्श – सलाह-मशविरा

द्रोह – गद्दारी

लक्ष्य – उद्देश्य

अतिशय – बहुत अधिक

अभीष्ट – चाहा हुआ

विस्मित – चकित

बलिष्ठ – ताकतवर

स्तंभित – सुन्न, स्तब्ध

3. (क) उद्यमी को सब कुछ मिल सकता है।

(ख) फुटबॉल खिलाड़ी को शरीर के रोगों से मुक्त होना चाहिए।

(ग) अनिच्छा होते हुए भी मैंने अपनी बात को उसके सामने रखा।

(घ) धर्मगुरुओं को सब कठिनाइयाँ सहनी पड़ती हैं।

(ङ) परिश्रमी ही खोज करने वाले बन सकते हैं।

4. (क) (ब) (✓)

(ख) (स) (✓)

भाषा से

1.

समस्त पद		**विग्रह**
महात्मा	–	महान है जो आत्मा
दशानन	–	दस हैं आनन जिसके
चक्रपाणि	–	चक्र है हाथ में जिसके
चतुर्मुख	–	चार हैं मुख जिसके

2.

समस्त पद	**विग्रह**	**समास का नाम**
विषधर	विष को धारण करने वाला (सर्प)	बहुव्रीहि
श्वेतांबर	श्वेत हैं अंबर जिसके (सरस्वती)	बहुव्रीहि
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका (शिव)	बहुव्रीहि
गजानन	गज के समान आनन (मुख) है जिसका (गणेश)	द्विगु

3. छात्र स्वयं करें।

4.

देवी	+	अर्पण	= देव्यर्पण	मातृ	+	अनुग्रह	= मातृनुग्रह
अन्यथा	+	एव	= अन्यथैव	मनु	+	अंतर	= मन्वंतर
हित	+	ऐषी	= हितैषी	प्रति	+	अक्ष	= प्रत्यक्ष

5. (क) विद्यैव = विद्या + एव

(ख) अभ्यागत = अभि + आगत

(ग) परमौषधि = परम + औषधि

(घ) मात्रादेश = मात्र + आदेश

(ङ) अन्वय = अनु + अय

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

इस संबंध में यह तर्क दिया गया है कि यदि युद्ध के लाभों को नुकसान से अधिक माना जाता है और यदि कोई अन्य पारस्परिक रूप से सहमत समाधान नहीं है तो एक राष्ट्र युद्ध में जाएगा अधिक विशेष रूप से कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि युद्ध मुख्य रूप से आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक कारणों से लड़ा जाता है।

गहन सोच

छात्र/छात्राएँ पाठ पढ़कर बताएँ कि उन्होंने इस पाठ से क्या सीखा है? तथा यह भी उपाय बताएँ कि युद्ध हो ही नहीं।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से जानकारी प्राप्त कर पोरस की जीवनी लिखिए।

3. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एकांकी का मंचन करें।